वर्ष 11, अंक 8 मई 2012

डाक पंजीयन संख्या ए-डी-306/2012-14
आर.एन.आई. : 8380

विश्व स्नेह समाज

एक क्रान्ति

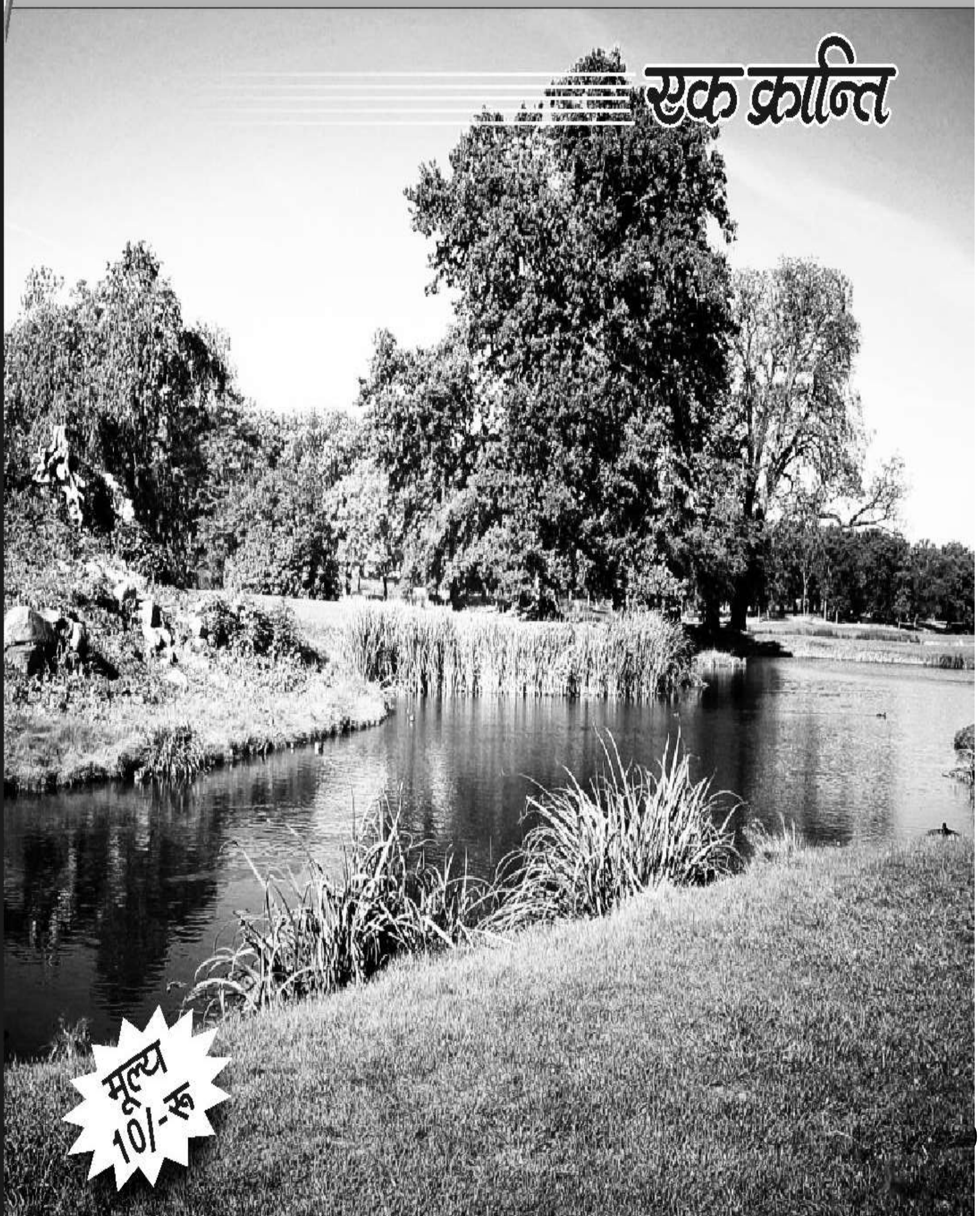

मूल्य 10/-रू

कल, आज और कल भी बहुपयोगी

विश्व स्नेह समाज

वर्ष:११, अंक:०८ मई-२०१२,
इलाहाबाद

संरक्षक
बुद्धिसेन शर्मा
प्रधान सम्पादक
गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी
प्रबंध सम्पादक
श्रीमती जया
विज्ञापन प्रबंधक
महेन्द्र कुमार अग्रवाल

संरक्षक सदस्यः
डॉ0 तारा सिंह, मुंबई
डी.पी.उपाध्याय, बलिया

सम्पादकीय कार्यालयः

एल.आई.जी.–93, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद –211011
कानाफुसीः 09335155949
ई–मेलःvsnehsamaj@rediffmail.com

आवश्यक सूचनाः
पत्रिका में प्रकाशित किसी भी रचना के लिए लेखक स्वयं जिम्मेदार होगा। पत्रिका परिवार, प्रकाशक या संपादक का इससे कोई लेना देना नहीं होगा। विवाद के संदर्भ में न्यायालय क्षेत्र इलाहाबाद होगा।
सभी सम्मानित सदस्यों से आग्रह है कि अगर पत्रिका का अंक आपको उक्त माह की 15 तारिख तक प्राप्त न हो तो कृपया हमें एक पोस्ट कार्ड से सूचित करने की कृपा करें अथवा पत्रिका के कार्यालय को सूचित करें.
स्वामी, प्रकाशक,संपादक, मुद्रक गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी द्वारा भार्गव प्रेस बाई का बाग से मुद्रित कराकर एल.आई.जी.–93, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा,इलाहाबाद से प्रकाशित किया.

एक प्रतिः	रु0 10/–
वार्षिकः	रु0 110/–
पॉच वर्ष–	रु0 500/–
आजीवन सदस्यः	रु0 1100/–
संरक्षक सदस्यः	रु0 5000/–

अंदर पढ़िए

चुनौतिया ही चुनौतियां है युवा मुख्यमंत्री के लिए 06

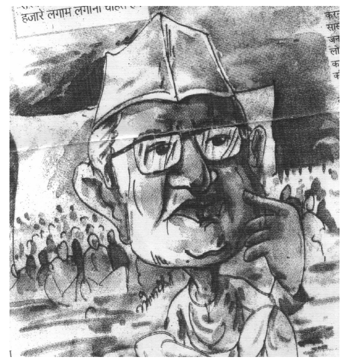

'लोकपाल कानून' बनाम जनसेवा ०८

आर्थिक मंदी, फिर मची खलबली १०

भारत की पत्रकारिता का दुःखद महात्मय? १२

स्थायी स्तम्भः

प्रेरक प्रसंग	०४
अपनी बात	०५
कविताएं-	३०,३१
अहिन्दी भाषी रचनाकार-	२६
अध्यात्म	२२
महिला रचनाकार	२१
स्मृति शेष	१८
चिन्तन	१६
कहानीः वह महिला, सौदागर	१७,२४
साहित्य समाचार-	१८,२६,२६,३२
चिट्ठी पत्री	२८
लघु कथाएं	३३
समीक्षए	३४

ममता, दया का नाम है मां, जिसके उच्चारण मात्र से ही हृदय के समस्त 'तार' झंकृत हो जाते है, मन पवित्र हो जाता है, तथा वह अगाध 'स्नेह से हिलोरें' लेने लगता है.

++++++++++++++++++++++++

वात्सल्य की साक्षात निर्विकार प्रतिमा, पुत्र हेतु सर्वस्व निछावर करने वाली वीरांगना, तेरी महिमा अगाध है. संसारिक सम्बन्धों में सर्वत्र स्वार्थ होगा, परन्तु तुझमें उसका लेश मात्र भी स्पर्श नहीं.

++++++++++++++++++++++++

तेरा पुत्र तुझे क्या देगा, तूनें कभी नहीं सोचा, उसके कल्याण की ही कामना की है. पुत्र के प्रति तेरा भाव गंगा की पुनीत धारा के समान पवित्र है.

++++++++++++++++++++++++

विध्वन्स लीला में क्रोध का स्थान सर्वोपरि है. इसके प्रगट होने पर सृजन संहार में परिवर्तित हो जाता है.

++++++++++++++++++++++++

क्रोध से असन्तुलित मन, विवेक के प्रतिकूल कार्य करता है. सतत अविवेक से ब्याप्त हृदय उसके उभारने में सहायक होता है. भावनाओं का अन्तर्द्वन्द तथा दुर्बल मन इसको परिपक्व करते हैं.

++++++++++++++++++++++++

क्रोध उत्पन्न होने से मानसिक एवम शारीरिक प्रभाव दोनों शरीर पर पड़ता है. मन उद्विग्न हो जाता तथा आंखो, नाक, मुॅख तथा भौंहो में तनाव तथा वाणी में कठोरता आ जाती है.

++++++++++++++++++++++++

अंगारो पर चलना आसान नहीं है, किन्तु अपने दिल में यह दृढ़ विश्वास कर लीजिए कि आग हमें नहीं जला सकती, हृदय में संदेह नाम की कोई चीज ही न रहने पावे, साथ ही उस परमात्मा पर अटल विश्वास रखिए कि वह हमें जलने से बचायेगा! इस प्रकार के विचारों से आप अंगारो पर हंसते हुए चल सकते हैं. यह वह राज है जिसको पाकर आम साधारण आदमी आग पर चलकर करिश्मा दिखाते हैं.

++++++++++++++++++++++++

मनुष्य को अपने कर्तव्यों का सदा ध्यान रखना चाहिए अन्यथा वह अद्य पतन की ओर बढ़कर अपूर्ण रहेगा.

✍**दाऊजी**

अदाब अर्ज़ है

चहुंदिशि 'नासिर' भीड़ है, किसे कहें इंसान।
सांचे में इंसान के, आज ढला शैतान।।

हिन्दी भाषा राष्ट्र की, है 'नासिर' अभिराम।
चहुंदिशि धूम मचा रही, जग में आठों याम।।

उसमें बसता है चमन, मुझ में बसती पीर।
उसमें खिलते हैं सुमन, मैं बरसाता नीर।।

पीकर भी मीठा सलिल, उदधि रहा नमकीन।
काले दिल वाले भला, कब होते रंगीन।।

मधुऋतु आई लौटकर, छलके फिर मधु-जाम।
बात करें क्या काग की, हंस हुए बदनाम।।

निर्वाचन का शोर है, नेता भूले राज।
घर-घर जाकर वोट फिर, मांग रहे वे आज।।

घोटालों की बाढ़ है, पनपा भ्रष्टाचार।
बेचारी मजबूर है, गठबन्धन सरकार।

✍डॉ० मिर्ज़ा हसन नासिर
न्यू हैदराबाद, लखनऊ, उ०प्र०

अपनी बात

बेराजगारी भत्ता के बदले काम लिया जाएगा

समाजवादी पार्टी के उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री ने अपने चुनावी वादों में यह कहा था कि बेरोजगारों को बेरोजगारी भत्ता दिया जाएगा. हालांकि यह कदम लोकलुभावन या खैरात बांटने की लालसा भर था. इस खैरात को पाने की लालसा में रोजगार दफ्तर जहां किसी अधिकारी के स्थानान्तरण होने पर उसे दण्डित किया जाना माना जाता था. बाबू दिन भर मक्खी मारते रहते थे. सूबे के सारे रोजगार दफ्तर देखते ही देखते गुलजार हो गये. रोजगार अधिकारी व बाबूओं की पूछ बढ़ गयी. आस-पास के चाय-पान के दुकानदारों के दिन लौट आए. अपने विभाग को सूखा (कोई ऊपरी आय नहीं) विभाग मानने वाले बाबू अब हरे-भरे हो गये यानि उन्हें अब कमाई का जरिया मिल गया. खैरात की भूखी जनता (बेरोजगार) सुबह से पक्तियों में खड़े होकर पंजीकरण करवाने के इंतजार करने लगें. धड़ल्ले से एक सौ से लेकर ५०० रुपये तक में पंजीकरण का सौदा होने लगा. बेरोजगारों में वे लोग भी शामिल हो गये जो लाखों रुपये वार्षिक कमाते हैं. रोजगार दफ्तरों पर लाठिया चलने लगी, दलालों की पौ बारह हो गई. लेकिन सरकार के गठन होने के बाद इसमें काफी नियम व शर्ते जोड़ी गयी. यानी ३५ वर्ष से ऊपर के बेरोजगारों को ही बेरोजगारी भत्ता मिलेगा. ३५ वर्ष से कम वालों की कुछ भीड़ कम हुई. लेकिन बाप, चाचा, दादाओं की भीड़ लगने लगी. यानि खैरात पाने की लालच में ६०-६५ वर्ष की उम्र वाले भी सरीक होने लगें. फिर नियम बदला कि ३५ से ४५, और अंत में ३० से ४५ वर्ष तक उम्र वालों को ही बेरोजगारी भत्ता दिया जाएगा तथा जिनकी वार्षिक आय छत्तीस हजार रुपये तक हो, कहीं काम न करते हो, कोचिंग, ट्यूशन, ब्यूटीपार्लर न चलाते हो, किसी भी प्रकार का कोई रोजगार न करते हों. लेकिन ये सारे नियम जैसा हर जगह होता है किनारे कर लोग उम्र सीमा को ध्यान में रखकर पंजीकरण करवाते रहे. बेरोजगारों से पूछने पर पता चला कि आय प्रमाण-पत्र तो पैसा खर्च कर बनवा लेंगें. हजार रुपये महीनें तो मुफ्त में मिलेगें. लेकिन इस विचारधारा पर कुठाराघात हो गया जब यह निर्णय आया कि बेरोजगारी भत्ता देने के एवज में उनसे उनकी योग्यता के अनुरुप काम लिया जाएगा. हालांकि ये स्वागत योग्य फैसला है कि पैसा देंगे बदले में काम लेंगें. इससे बेरोजगारी भत्ता लेने वही लोग आएंगे जो वास्तव में बेरोजगार होंगें. लेकिन आम जनता को यह शर्त मंजूर नहीं हैं. क्योंकि उन्हें तो खैरात में पैसे लेने की आदत बन गई है. बैंको से कर्ज़ लेगें लेकिन चुकाना न पड़े, पैसा मिल जाए लेकिन काम न करना पड़े. ये तो अब आम जन की आदत में सुमार हो गया है. वे ऐसी पार्टियों को ही वोट देना पसंद ही करते हैं जिसके घोषणा पत्र में खैरात बांटने के ज्यादे वादे होते हैं और राजनीतिक पार्टिया भी यही चाहती है कि वे जनता के पैसे को खैरात बांटकर लुभाकर वोट लेते रहे और राज्य करते रहें. जैसे दो रुपये किलो चावल, किसानों के कर्ज़ माफ़ होंगें, आरक्षण दिया जाएगा, फीस मांफ होगी, छात्रवृत्ति दी जाएगी, लैपटाप व टीवी दी जाएगी. लेकिन युवा मुख्यमंत्री ने अपने इस शर्त से कि पैसा के बदले काम लिया जाएगा. एक युवा सोच का अच्छा परिचय दिया है. इस फैसले का स्वागत किया ही जाना चाहिए कि बेरोजगारों को हम पैसा देंगे लेकिन बदले में काम लेगें.

गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

मुद्दा

जनादेश उत्तर प्रदेश के सबसे युवा मुख्यमंत्री अखिलेश की बारी

चुनौतिया ही चुनौतियां है युवा मुख्यमंत्री के लिए

उत्तर प्रदेश के चुनाव में जनता ने बहुजन समाज पार्टी की सर्वजन हिताय सर्वजन सुखाय के नाम पर लुटने वाली मुख्यमंत्री सुश्री मायावती को चित्त करते हुए समाजवादी पार्टी के युवा नेता अखिलेश यादव को अपने सूबे की बागडौर पूर्ण बहुमत से सौंप दी. मायावती के राज में गुडागर्दी पर लगाम तो अवश्य लगी थी लेकिन भ्रष्टाचार की चारो तरफ गंगा बहने लगी थी. भ्रष्टाचार का आलम यह हो गया था कि बाबू और अधिकारी खुलेआम घूस लेने लगे थे. कुछ कहने पर सीधे कहते थे कि मंत्रीयों के प्रत्येक दौरे पर ब्रीफकेस भर कर देना पड़ता है. काम करवाना हो तो दीजिए वरना. ..? बसपा के मंत्री और विधायक ही गुंडागर्दी कर जमीने हड़पने में लगे हुए थें. अधिकांश मंत्री व विधायक जो २००७ के चुनाव में लाखों के मालिक थे वे करोड़ो के मालिक बन गये. पिछले पांच सालों में कहा से उनकी सम्पत्ति में तीन गुना से सात गुना तक वृद्धि हो गयी ये जांच का विषय हो सकता है. लेकिन सवाल यह उठता है कि जांच कौन करेगा? जब हमाम में सब नग्गे हैं.

दूसरी बड़ी बात यह रही कि भारतीय कांग्रेस पार्टी के युवराज राहुल गांधी जो प्रदेश में सत्ता का सपना पाले हुए थे, कम से कम इस बात की गफलत तो

पाले ही हुए थे कि सत्ता की चाबी उनके हाथ में तो रहेगी ही. लेकिन उनकी पार्टी के बड़बोले नेताओं ने उनके इस अभियान का पलिता लगा दिया. जब कांग्रेस के युवराज राहुल गांधी ने इलाहाबाद में अपने नाना के संसदीय क्षेत्र फुलपुर से अपने चुनावी अभियान की शुरुआत की थी तब वास्तव में लग रहा था कि कांग्रेस इस बार सौ सीट तक तो पहुंच ही जाएगी. लेकिन उनके कुछ मंत्रियों ने बड़बोलेपन का बयान देकर, कार्यकर्ता विहीन

✍डॉ० गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

पार्टी का पलिता लगाने में कोई कोर कसर नहीं छोड़ी. और तो और मुख्यमंत्री के पद को लेकर भी जोर आजमाइश प्रारम्भ हो गई थी. कौन बनेगा मुख्यमंत्री? लेकिन जनता तो जनता है. खैर राहुल के दिन-रात दौड़े के कुछ सुखद परिणाम भी आए कि उनकी पार्टी को २००७ के चुनाव के मुकाबले ६ सीटें अधिक मिली.

सत्ता का दंभ भरने वाली बड़बोलेपन की जमात भारतीय जनता पार्टी कमतर नहीं थी. अलग चाल व चरित्र की बात करने वाली भारतीय जनता पार्टी सत्ता हासिल करने के लिए वो सब कुछ की जो उसके स्तर से संभव था. भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष नितिन गडकरी ने बसपा सरकार के बदनाम मंत्री बाबू लाल कुशवाहा को पार्टी में शामिल किया जिसके खिलाफ उनकी पार्टी प्रमाणित विवरण आये दिन प्रेस कांफ्रेस कर दे रही थी. लोध वोट को अपने पाले में लाने के लिए उमा भारती को मुख्यमंत्री घोषित कर आगे बढ़ी. लेकिन ये सब निर्णय उसका पलिता लगाने में मुख्य भूमिका अदा किए. उसकी सीटें २००७ के मुकाबले कम हो गई. बस इज्जत की बात यह रही है कि तीसरा स्थान उसका बरकरार रहा और राहुल की हार का बिगुल समाचार पत्रों, चैनलों में फुंककर अपनी इज्जत बचाने को असंभव प्रयास करती रही.

अखिलेश यादव के सामने १० बड़ी चुनौतिया-

१. उत्तर प्रदेश में जब भी सपा की सरकार आयी तब उनके शासन में गुंडा राज का बोलबाला रहा, विरोधियों के द्वारा उनके शासन में गुंडाराज का दाग लगाया जाता रहा है. अब पार्टी के सामने पहली बड़ी समस्या यही है कि कैसे हटेगा पार्टी पर गुंडाराज का दाग?

२. सपा में बाहुबली नेताओं का बोलबाता है, रहा है. अब देखना यह है कि अखिलेश का शासन कैसे इस पर काबू पाते हैं?

३. सपा ने जनता को लुभाने के लिए जो वादे किए है उनको पूरा करने के लिए हर साल ६०हजार करोड़ की राशि कहां से आएगी?

४. छवि कैसे बदलेंगे गुंडाराज की. वो भी ऐसे कार्यकर्ताओं के बल पर जो गुंडई के लिए ही मशहूर हैं?

५. यूपी के विकास के लिए कैसे आयेंगे बड़े निवेश या बड़ी कंपनिया?

६. रोजगार की दृष्टि से क्या सिर्फ नोएडा और गाजियाबाद ही विकसित होंगें. बाकी शहरों का क्या होगा?

७. क्या वो कानपुर को दोबारा से इंडस्ट्रियल हब के रूप में विकसित कर पायेंगें?

८. बिजली की समस्या से कैसे निपटेंगें, दूसरे राज्यों से बिजली लेंगे या फिर यूपी में ही संयंत्र बैठाएंगें?

९. मायावती सरकार द्वारा चलाई गई योजनाओं को रोक दिया जाएगा या उनको आगे बढ़ाया जाएगा?

१०. उत्तर प्रदेश में सपा सरकार ऐसा कौन सा कदम उठाती है जिससे योजनाओं में होने वाले घोटालों को रोका जा सकें?

भ्रष्टाचार से त्रस्त जनता ने पुरानी सपा सरकार की गुंडा गर्दी को भुलाकर लोक लुभावन वादों के लिए पुनः सत्ता की चाभी सौंप दी. वह भी पूर्ण बहुमत से. सपा ने चुनाव में अहम भूमिका अदा करने वाले युवराज अखिलेश यादव को अपना नेता चुना और वे उत्तर प्रदेश के सबसे युवा मुख्यमंत्री बनने में कामयाम हो गये. १ जुलाई १९७३ को जन्में अखिलेश यादव ने अपनी स्कूली शिक्षा इटावा के इसाक मेमोरियल स्कूल में की फिर राजस्थान के ढोलपुर मिलिटरी स्कूल से शिक्षा ग्रहण की. उसके बाद जयाचामाराजेन्द्र कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग, मैसूर से उन्होंने इंजीनियरिंग की डिग्री हासिल की. उसके बाद उन्होंने सिडनी विश्वविद्यालय से पर्यावरण अभियांत्रिकी में परास्नातक किया. पढाई खत्म करते हुए अखिलेश उत्तर प्रदेश वापस आये और अपने पिता मुलायम सिंह के साथ जुड़ गये. अखिलेश की शादी डिम्पल यादव से हुई और उनके तीन बच्चे हैं. पढ़ाई पूरी होने के तुरंत बाद अखिलेश यादव समाजवादी पार्टी में शामिल हुए. सपा में शामिल होने से पहले उन्होंने डॉ० राम मनोहर लोहिया के जीवन व उनके विचारों का गहन अध्ययन किया. फिर २००० में कन्नौज से उपचुनाव लड़ा और जीत दर्ज की. २००४ और २००९ के लोकसभा चुनावों में अखिलेश यादव ने लगातार जीत दर्ज कर इस सीट पर अपना कब्जा बनाये रक्खा. अखिलेश ने फिरोजाबाद से भी २००९ में सांसदी का चुनाव जीता था, बाद में उन्हें एक सीट छोड़नी पड़ी. उनमें पहले की तुलना में अधिक शालीनता आ गई हैं. पूरे चुनाव में अखिलेश यादव ने एक भी भाषण आवेश में आकर नहीं दिया, चाहे वो राहुल गांधी के खिलाफ हो या फिर मायावती के. उनके साथ सबसे बड़ी बात तो यह है कि युवा कार्यकर्ता उनकी बात मानते हैं. हालांकि वरिष्ठ कार्यकर्ता भी कभी उनकी बात से इनकार नहीं करते हैं. युवाओं की फौज के बल पर २२४ सीट जीत कर सत्ता में आयी समाजवादी पार्टी के लिए युवा नेता को आगे करना जरुरी भी था. अखिलेश यादव के उस बयान का जिक्र करना चाहिये जो उन्होंने मायावती के खिलाफ हाल ही में दिया था. 'मायावती जी कहती हैं कि साइकिल पंचर हो चुकी है. मैं कहना चाहूंगा कि साइकिल पंचर हो गई तो बनवा लूंगा, कैरियर टूट गया तो नया लग जायेगा, हैंडल टूट गया तो नया लग जायेगा, ट्यूब नया डलवा लेंगें, चेन नई लग जायेगी लेकिन अगर हाथी जो अभी कम पागल है, वो ज्यादा पागल हो गया तो क्या होगा.'

'लोकपाल कानून' बनाम जनसेवा

लोकपाल कानून कोई दांवपेच नहीं है. रिश्वतखोरी, सरकारी धौंसबाजी, लालफीताशाही, बेईमानी और लूट का खामियाजा हरेक का भुगतना पड़ता है. घर की बिजली का न आना, सड़को पर अतिक्रमण होना, गंदी गलियां, बदबूदार ढेर, दुकानदारों की मुनाफाखोरी, गुंडो की छेड़खानी, महंगाई, मकानों की कमी वगैरह, सबके पीछे वह भ्रष्ट तंत्र है, जिस पर अन्ना हजारे लगाम चाहते हैं.

✍डॉ० अरूण कुमार आनन्द
चन्दौसी, उ.प्र.

सरकारी और विपक्षी बेंचों ने मिलकर संसद में लोकपाल कानून को बनने नहीं दिया. लोकसभा ने तो जैसे-तैसे सरकारी लोकपाल कानून को पास कर दिया था पर राज्यसभा में यह जा अटका और बाहर अनशन पर उतारू अन्ना हजारे की अब तक की गई मेहनत बेकार हो गई. जो थोड़ी-बहुत कसर बची थी, वह मुम्बई वालों ने बांद्रा के मैदान में न पहुंचकर पूरी कर दी. अन्ना हजारे की भ्रष्टाचार विरोधी मुहिम चाहे कितनी भी मध्य वर्ग की हो, उसे पूरी तरह नकारना कांग्रेस के लिए संभव नहीं है क्योंकि उसे मालूम है कि हर मंत्री पैर के नाखून से सिर के बाल तक भ्रष्टाचार के कीचड़ में सना है.

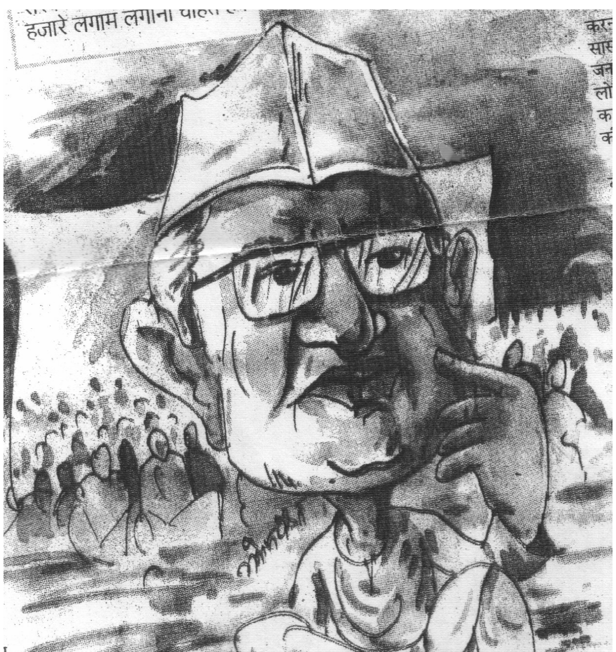

देश का तंत्र ही ऐसा है, जिसमें बेईमानी के बिना काम नहीं चलता. जब यूरोप व अमेरिका तक में हर बड़े अफसर, हर मंत्री, हर गवर्नर, हर प्रधानमंत्री पर छोटे-बड़े अरोप लग रहे है, जहां आम जनजीवन में भ्रष्टाचार कम है तो यहां जहां संतरी से मंत्री और चपरासी से चीफ सेक्रेटरी तक रिश्वत के लिए बिना न मानता हो, भ्रष्टाचार का आरोप तो किसी पर भी लग सकता है.

लोकपाल कानून कोई दांव-पेंच नहीं है. रिश्वतखोरी, सरकारी धौसबाजी, लालफीताशाही, बेइमानी और लूट का खामियाजा हरेक को भुगतना पड़ता है.

घर की बिजली का न आना, सड़को पर अतिक्रमण होना, गंदी गलियां, बदबूदार ढेर, दुकानदारों की मुनाफाखोरी, गुंडो की छेड़खानी, महंगाई, मकानों की कमी वगैरह, सबके पीछे वह भ्रष्ट सरकारी तंत्र है, जिस पर अन्ना हजारे लगाम लगाना चाहते हैं. यह लगाम कितनी कसी हो, चाबुक कितना लंबा हो, ये बातें दूसरी है. सरकार अपने हकों पर आंच नहीं आने देना चाहती और हर संभव तरीके से लोकपाल जैसे कानून को बनाने से बचना चाहती हैं. इसमें कांग्रेस की ही नहीं, दूसरे दलों की भी मिलीभगत है क्योंकि हर दल कहीं न कहीं राज कर रहा है. केन्द्र में नहीं तो राज्य में, राज्य में नहीं तो जिला परिषद में या फिर नगर निकायों में. कोई नहीं चाहता कि लोकपाल कानून बने और अफसर व नेता हाथ बांधे आम नागरिकों की तरह अदालतों के चक्कर काटें.

लोकपाल कानून को केवल राजनीतिक मामला समझना बड़ी भूल है. जब तक घरों की औरतें, बच्चे, बूढ़े घर से बाहर न निकलेंगे, लोकपाल कानून न बनेगा. यह बनेगा तब, जब जनता संकल्प कर ले कि जहां जो राज कर रहा है, उसे हटाना है क्योंकि वह लोकपाल कानून नहीं बनने दे रहा. पहले हर जीता उम्मीदवार हार जाए, चाहे उसकी जगह कोई गधा जीत जाए. यह लड़ाई कांग्रेस के खिलाफ नहीं, हर राजनीतिक दल के खिलाफ हो. सभी नेताओं को अहसास हो कि उन्हें विदा कहने को जनता तैयार है. अगर राज करना है तो कुछ बंदिशे तो लगवा लो.

आखिर औरतें देह सुख के लिए अपने ऊपर शादी के बंधन लगवाती है या नहीं? बच्चों के सुख के लिए अपने शरीर और सुखों की कुर्बानी देती है या

नहीं? कमाऊ जना पास रखने के लिए पति की सेवा करती है या नहीं?

नेताओं को औरतों की तरह व्यवहार करना सिखाना पड़ेगा. लोकपालनुमा सास और पति उसे स्वीकार कर ले वरना जनता से तलाक लेकर घर में बैठ जाओ. लोकपाल कानून को जनसेवा तलाक कानून बनवाने की जिम्मेदारी क्या औरतों की नहीं है?

अगर मानती है तो सिलवाइए सफेद टोपी, लिखवाइए 'मैं लोकपाल की समर्थक' और मुहल्ले के चौराहे पर शनिवार सुबह आठ बजे हो जाइए आधे घंटे के लिए जमा और सारा ट्रैफिक जाम कर दीजिए. फिर देखिए कैसे लोकपाल कानून नहीं बनता. अजी औरतें तो अच्छे-अच्छे राजा-महाराजाओं और तानाशाहों को मुट्ठी लहराइए तो सही.

तभी तो पता चलेगा कि ताकत कितनी है आपकी मुट्ठी में! संदेश देने के लिए थाली बजाइए, फोन करिए, फेसबुक का इस्तेमाल करिये. अपनी अगली पीढ़ी के लिए छोटी कुर्बानी करिये ताकि यह महंगाई, यह सरकारी धौंस, यह लापरवाही, यह लालफीताशाही, ये धमकियां और यह बेईमानी न सहनी पड़े. कुर्सी पर बंधन बांधो कि औरत आ रही है.

गुजारिश

१. 'विश्व स्नेह समाज' आपकी अपनी पत्रिका है. इसे अकेले न पढ़े, बल्कि दूसरे दोस्तों को भी इससे परिचित कराएं.
२. आप अपनी मौलिक एवं अप्रकाशित रचनाएं ही भेजें. एक बार में अधिकतम दो ही रचनाएं भेजें। उनके प्रकाशनोपरान्त ही दूसरी रचना भेजें. रचनाएं पर्याप्त हासिया छोड़कर कागज के एक तरफ स्पष्ट सुपाठ्य अक्षरों में लिखी हुई या टंकित होनी चाहिए. रचनाओं पर अपनी मौलिकता व अप्रकाशित होने का उल्लेख अवश्य करें. बिना उचित टिकट लगे जबाबी लिफाफे के अस्वीकृत रचना लौटाई नहीं जाती है.
३. रचना प्रेषण के कम से कम तीन माह तक अन्यत्र प्रकाशित होने के लिए रचना न भेजें और न ही कहीं प्रकाशित रचना भेजने. वैसे तो पत्रिका सभी बुक स्टालों पर उपलब्ध कराई जा रही है. फिर भी मिलने में असुविधा हो तो सदस्यता ग्रहण कर लें, पत्रिका डाक द्वारा भेज दी जाएगी.
४. सदस्यता शुल्क पत्रिका के खाते में सीधे जमा कर/धनादेश/बैंक ड्राफ्ट द्वारा 'विश्व स्नेह समाज' के नाम भेजें. शुल्क के साथ-साथ एक पोस्टकार्ड भी भेजें, जिस पर अपना नाम व पता साफ-साफ लिखें.
५.जो रचनाएं आपको अच्छी लगें उसके साथ रचनाकार को खत लिखकर अवश्य प्रोत्साहित करें.
६. 'विश्व स्नेह समाज' के परिशिष्ट अथवा प्रायोजित विशेषांक योजना में शामिल होने के लिए 09935959412 या 09335155949 पर सम्पर्क करें.
७. विश्व स्नेह समाज मात्र एक पत्रिका नहीं है बल्कि समाज में एक क्रांति लाने की मार्ग दर्शक है. इसे हर सम्भव सहयो प्रदान करें.

❑संपादक

हिन्दी विषय वाले सम्मानित होंगें

प्रत्येक विद्यालय/महाविद्यालय से हाईस्कूल/इंटरमीडिएट/स्नातक अंतिम वर्ष में हिंदी विषय में सर्वाधिक अंक पाने वाले छात्रों को संस्थान २००६ से सम्मानित करता आ रहा है. इसमें छात्र/छात्राओं को अपने अंक पत्र, नाम व सम्पूर्ण पता, दूरभाष/मोबाइल सं०/ईमेल प्रधानाचार्य/ विभागाध्यक्ष द्वारा प्रमाणित कराकर ३० नमवबर २०१२ तक नीचे लिखे कार्यालय के पते पर भेजें. जिस विद्यालय के छात्र लगातार पांच वर्ष तक सम्मानित होगें उस विद्यालय के हिंदी विषय के अध्यापक/प्रवक्ता/विभागाध्यक्ष को भी सम्मानित करने की योजना है. सभी चयनित छात्रों को गरिमामय कार्यक्रम में हिन्दी उदय सम्मान व उपहार सामग्री प्रदान की जाएगी. अन्य किसी प्रकार की जानकारी व प्रस्ताव निम्न पते पर लिखेंः

सचिव,
विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान,
एल.आई.जी-१४४/६३, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद-२११०११
उ.प्र.मो० 09335155949 **email:** sahityaseva@rediffmail.com

मुद्दा

आर्थिक मंदी, फिर मची खलबली

साधना शाह

अंतरराष्ट्रीय साख निर्धारक संस्था स्टैंडर्ड ऐंड पुअर्स यानी एसऐंडपी ने अमरीकी क्रैडिट की रेटिंग एएए से घटा कर एए प्लस कर दी. बताया जाता है कि ६५ सालों में ऐसा पहली बार हुआ है. इस खबर ने दुनिया भर के शेयर बाजारों को हिला कर रख दिया. भारतीय शेयर बाजार भी औंधे मुंह गिरा. उसका सूचकांक अपने १४ महीने के सबसे निचले स्तर पर पहुंच गया. यही हाल दुनिया के अन्य शेयर बाजारों का भी रहा. असर ऐसा हुआ कि महज एक ही घंटे में कुछ लोगों का दिवाला पिट गया. इसी के साथ पूरी दुनिया में एक बार फिर मंदी हावी हो गई. २००७ की मंदी का असर यह रहा कि अमरीका में गरीबी का प्रतिशत बढ़ गया है और २००७ से लेकर २०१० तक के आंकड़ों में उल्लेखनीय फर्क नजर आने लगा है.

बताया जाता है कि इसका असर आने वाले सालों में और भी दिखाई देगा. हाल ही में अमरीका के सेंसेक्स ब्यूरो की ओर से जारी आंकड़ों में बताया गया है कि २०१० में गरीबी की प्रतिशत में ०.८ प्रतिशत की वृद्धि हुई है और यह १५.१ प्रतिशत पर पहुंच गई है. २००७ में मंदी की शुरुआत में यह प्रतिशत २.६ थी, जबकि २००६ में १४.३ प्रतिशत पर थी. गौरतलब है कि १५.१ का आंकड़ा रेटिंग से पहले का है. चूंकि मंदी का दूसरा दौर चल रहा है, इसलिए जाहिर है अभी इस प्रतिशत में और वृद्धि होगी.

पहली नजर में यही लगता है कि इस रेटिंग में कोई ज्यादा फर्क नहीं है लेकिन जानकारों के अनुसार 'अमरीकी अर्थव्यवस्था पर विश्वबाजार निर्भर करता है इसलिए रेटिंग में हल्की सी भी कमी का असर दिखना स्वाभाविक है. इस रेटिंग का कुल मिला कर आशय यह है कि अमरीका को कर्ज देने में जोखिम है. दुनिया भर में अब तक यह आम धारणा थी कि अमरीकी सरकार का कोषागार काफी मजबूत है. यह खत्म न होने वाला कुबेर का खजाना है. इसीलिए इसे कर्ज देने में कोई खतरा नहीं है, लेकिन एसऐंडपी द्वारा हाल ही में की गयी रेटिंग से इस आम धारणा को गहरा धक्का लगा है.

लेहमैन ब्रदर्स समेत तमाम दिग्गज बैंक २००८ में आर्थिक मंदी के दौर से गुजर चुके हैं, जिसका असर पूरी दुनिया में देखा गया. अभी दुनिया उस झटके से पूरी तरह उबर भी नहीं पायी है कि एक बार फिर से मंदी के बादल मंडराने लगे. ऐसे में भविष्य को सुरक्षित कर लेने की गरज से अमरीका के राष्ट्रपति बराक ओबामा ने कर्ज लेने की सीमा बढ़ाने का फैसला किया. यह मामला जब अमरीकी कांग्रेस में अनुमोदन के लिए आया तो बहुमत न होने के कारण ओबामा के प्रस्ताव को हरी झंडी नहीं मिल सकी. विपक्षी रिपब्लिकन पार्टी को इसके लिए मनाने का प्रयास किया गया लेकिन वह तैयार नहीं हुई. इसको लेकर रिपब्लिकन पार्टी और डेमोक्रेटिक पार्टी के बीच लंबी बहस और मशक्कत के बाद आखिरकार रिपब्लिकन पार्टी इसके लिए तैयार हो गई.

दुनिया भर में यह संदेश गया कि अमरीकी अर्थव्यवस्था पर भरोसा नहीं किया जा सकता क्योंकि वह कट्टरपंथियों और सिरफिरे नेताओं के हाथ में है. इससे पहले अमरीका में दिनोदिन बढ़ती जा रही बेरोजगारी के मद्देनजर राष्ट्रपति ओबामा पर आउटसोर्सिंग को बंद कराने के लिए दबाव डाला गया. बराक ओबामा अमरीका में निवेश के लिए दूसरे देशों को राजी करने हेतु विभिन्न देशों का हाल ही में दौरा भी कर चुके हैं। इससे यह आशंका पुख्ता हो जाती है कि दुनिया का सबसे सम्पन्न देश अमरीका अब कंगाली के कगार पर है।

साख की रेटिंग का फंडा: रेटिंग पर चर्चा करने से पहले देखें कि स्टैंडर्ड ऐंड पुअर्स कैसी संस्था है. १९०६ में अमरीका में स्टैंडर्ड स्टैटिस्टिक ब्यूरो नाम की एक संस्था हुआ करती थी जो अर्थव्यवस्था से संबंधित तमाम सूचनाओं को इकट्ठा किया करती थी. वह उन सूचनाओं को पूरे साल एक कार्ड के रूप में प्रकाशित किया करती थी. इसकी स्थापना लुतर ली ब्लेके ने की थी. वहीं १८६० में हेनरी वर्मनम पुअर्स ने अमरीका में एक और कंपनी की स्थापना की थी जो अमरीका की अर्थव्यवस्था पर सालाना तौर पर तमाम सूचनाओं को एक किताब के रूप में प्रकाशित किया करती थी. बाद में हेनरी वर्मनम के बेटे हेनरी विलियम ने इसे संभाला और इसका नाम एचवीऐंडएचडब्लू पुअर्स कंपनी रखा, लेकिन १९४१ में इन दोनों कंपनियों का विलय हुआ और यह स्टैंडर्ड ऐंड पुअर्स बन गयी तथा यह वित्तीय सेवा कंपनी के रूप में जानी जाने लगी. वित्तीय शोध, दुनिया भर के स्टॉक व बॉन्ड का विश्लेषण करने के साथ यह कंपनी सार्वजनिक और निजी कॉरपोरेशनों की रेटिंग करती है. इसकी रेटिंग को अमरीकी स्टॉक एक्सचेंज द्वारा मान्यता प्राप्त है.

क्रेडिट रेटिंग के लिए ग्रेड निर्धारित हैं. ये ग्रेड एएए से लेकर डी तक हैं. हाल ही में स्टैंडर्ड ऐंड पुअर्स ने विभिन्न पक्षों का विश्लेषण करके

अमरीकी अर्थव्यवस्था की साख की रेटिंग की है. इसकी रेटिंग के अनुसार, मौजूदा समय में अमरीका की रेटिंग एएए से गिरकर एए भी नहीं रही, बल्कि उससे भी नीचे एए प्लस हो गई है. यानी अमरीकी अर्थव्यवस्था की क्रेडिट रेटिंग सर्वोच्च एएए की सर्वोच्च रेटिंग से एए प्लस के तीसरे पायदान पर पहुंच चुकी है. एसऐंडपी ने यह भी कहा है कि यदि आगे भी यही हाल रहा तो वह अमरीकी ऋण साख को अगले १२ से १८ महीनों में और घटा सकती है. यही दुनिया भर के निवेशकों के लिए चिंता का विषय बन गया है.

स्टैंडर्ड ऐंड पुअर्स की रेटिंग का असर इतना जबरदस्त रहा कि शेयरों की बिकवाली का दौर शुरू हो गया. अमरीकी बॉन्ड के ग्राहक देशों, संस्थाओं और लोगों को भी यह आशंका होने लगी कि अगर अमरीका का खजाना खाली है तो उनकी रकम का डूबना तय है. वहीं अमरीका को कर्ज देने वाली संस्थाओं को भी कर्ज की रकम की वापसी को लेकर शंका होने लगी और लगने लगा कि २००८ की आर्थिक मंदी का जिन्न एक बार फिर से बोतल से बाहर निकल आया है. इसका असर विश्व की अर्थव्यवस्थाओं पर देखने को मिला और विश्व के तमाम प्रमुख शेयर बाजारों में भारी उथलपुथल मच गयी।

विशेषज्ञों की नजर में: कुछ का यह मानना है कि २००८ की स्थिति इससे बिल्कुल अलग थी. बल्कि दोनों स्थितियों में जमीन और आसमान का फर्क है. कोलकाता के जानेमाने अर्थशास्त्री शैबाल कर का मानना है कि यह महज एक आशंक है कि अमरीका एक बार फर आर्थिक मंदी की चपेट में आ सकता है। २००८ में जो स्थिति पैदा हुई थी, अर्थशास्त्र की भाषा में वह 'सबप्राइम क्राइसिस' कहलाती है. उस समय अमरीकी बैंक और वित्तीय संस्थानों ने ऐसी कंपनियों को कर्ज दिया था जो कर्ज को चुकाने में सक्षम नहीं थीं और कंपनियाँ डूब गयीं. इसीलिए कर्ज देने वाले बहुत सारी संस्थाओं को रकम वापस न मिलने के कारण मंदी का संकट देखने को मिला. इस बार मामला वैसा नहीं है. इस बार एसऐंडपी की रेटिंग के कारण बाजार में हड़कंप मचा है।

माना यह भी जा रहा है कि अगर यह आशंका सच साबित हुई तो अमरीका को अपनी परियोजना से बाहर जाकर कई लाख करोड़ डॉलर कर्ज लेना पड़ सकता है।

कल, आज और कल भी बहुपयोगी

विश्व स्नेह समाज मासिक

(एक क्रान्ति)

एल.आई.जी.–93, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद –211011
कानाफुसीः 09335155949 ई–मेलःvsnehsamaj@rediffmail.com

महोदय,
मैं विश्व स्नेह समाज मासिक का वार्षिक / पंचवर्षीय / आजीवन / संरक्षक सदस्यता शुल्क रुपये ....नकद / बैंक ड्राफ्ट / पे इन स्लिप..........................दिनांक......................के अन्तर्गत अदा कर रहा हूं.
अतः मुझे हर माह विश्व स्नेह समाज मासिक निम्न पते पर भेजें
नाम :..
पिता / पति का नाम :...
पता :..
डाकखाना :...जनपद..
राज्य :...पिन कोड...
दूरभाष / मो0..ईमेलः...

विशेष नियमः
01 सदस्यता शुल्क बैंक ड्राफ्ट इलाहाबाद में देय होना चाहिए.
02 कृपया अपना नाम व पता स्पष्ट अक्षरों में लिखें
03 सदस्यता शुल्क यूनियन बैंक के खाता क्रमांकः538702010009259 आईएफएससीस कोड (आरटीजीएस): UBIN0553875 में जमा कर जमा पर्ची की छाया प्रति कार्यालय को प्रेषित कर सकते हैं.
04 आजीवन सदस्यों का सम्पूर्ण सचित्र जीवन परिचय प्रकाशित किया जाता है व संस्थान के प्रकाशनों में 25प्रतिशत की छूट प्रदान की जाती है.
05 सरंक्षक सदस्यों का नाम प्रत्येक अंक में मोबाइल नं0 सहित प्रकाशित किया जाता है तथा सम्पूर्ण सचित्र जीवन परिचय भी प्रकाशित किया जाता है.

सदस्यता प्रकार	शुल्क(भारत में)	शुल्क (विदेशों में)
एक प्रति :	रु0 10 / –	$ 1.00 /
वार्षिक	रु0 110 / –	$ 5.00 /
पॉच वर्ष :	रु0 500 / –	$ 150 /
आजीवन सदस्यः	रु0 1100 / –	$ 350 /
संरक्षक सदस्यः	रु0 5000 / –	$ 1500 /

31 मई पत्रकारिता दिवस पर

भारत की पत्रकारिता का दुःखद महात्मय?

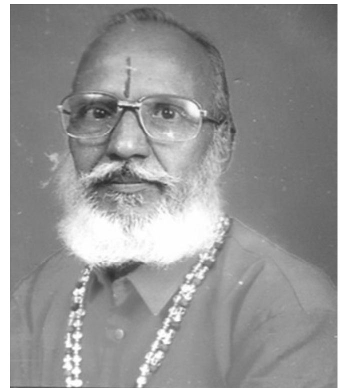

✍डॉ०अरुण कुमार आनंद
चन्दौसी, भीमनगर, उ.प्र.

भारत एक विकासशील देश है, इसने हर क्षेत्र में विकास के साथ-साथ प्रिंट मीडिया और इलेक्ट्रानिक मीडिया के क्षेत्र में भी व्यापक विकास किया है. प्रेस के तौर तरीका और छपाई की पद्धति भी बदल गई है. तब १९६० के पूर्व कुछ इने-गिने पत्र-पत्रिकाएं ही हिन्दी में निकलती थी? जिनमें अधिकतर लघु पत्रिकाएं अब बंद हो चुकी है. उनके स्थान पर सैकड़ो लघु पत्र-पत्रिकाएं आकर्षक रंग रूप में निकल रही है, उनका सुन्दर कलेवर और गेट अप देखकर पाठक स्वतः ही उनकी तरफ प्रभावित होकर खींचा चला जाता हैं. मगर अन्दर पत्रकारिता के नाम पर कुछ भी नहीं होता. अधिकांश पत्रिकाएं केवल निकालने के लिए होती है. न तो उनके पास कोई लक्ष्य होता है न दृष्टि होती है. न प्रतिबद्धता होती है. ये पत्रिकाएं क्यों निकल रही है? और किनके लिये निकाली जा रही है? यह एक महत्वपूर्ण प्रश्न है. ऐसे में यह सवाल उठता है कि लघु पत्रिकाओं का मिशनरी आन्दोलन जिस मिशन उद्‌देश्य से शुरू हुआ था क्या वह अब समाप्त हो गया है? इस मिशन ने अब व्यवसाय का रूप धारण कर लिया है? विशेष कर अब पत्र-पत्रिकाएं अपने व्यवसाय के व्यापक प्रचार -प्रसार, अपने तैयार उत्पादकों को बाजार में उपलब्ध करवाने का एक साधन बन गया है. जिनमें रचनात्मक साम्रगिया कम और उत्पादनों के अश्लील विज्ञापन सर्वाधिक होते हैं. आज ऐसे लघु-पत्रिकाओं की बाजार में भरमार है. सामाजिक और साहित्यिक पत्र-पत्रिकाओं को कोई पूछता ही नहीं. आज का पाठक वर्ग भी बाजार मं सेक्स और स्टंट पत्रिकाएं खोजता है. जिनमें सेक्स और आपराधिक गतिविधियों और तौर-तरीकों पर लम्बी चौड़ी साम्रगियां प्रकाशित होती है.

> १९६० के पूर्व कुछ इने-गिने पत्र-पत्रिकाएं ही हिन्दी में निकलती थी? जिनमें अधिकतर लघु पत्रिकाएं अब बंद हो चुकी है.
> अधिकांश पत्रिकाएं बिना लक्ष्य, दृष्टि और प्रतिबद्धता से निकाली जाती हैं.

मैं लगभग ५० वर्षो से पत्रिकाओं में लिख रहा हूं. मगर इधर आजकल हालात इतने बदल गये हैं कि हर प्रकाशक अपराध सेक्स और राजनीति पर लेख मांगने लगे हैं. इसके लिए मूंह मांगा पारिश्रमिक भी देने को तैयार होते हैं. साहित्यिक और सामाजिक पत्रिकाओं में एक भी रचना ऐसी नहीं होती जिसे रेखांकित किया जा सके.

किसी भी लघु पत्रिका का महत्व तभी होता है जब वह अपने स्तर-बल और स्पेस को ध्यान में रखकर प्रकाशित किया जाता है. पत्रिका समाज की गतिविधियों को कितना सार्थक प्रतिबिम्बित कर हस्तक्षेप करती है? इसके लिए पत्रिका का लम्बे समय तक नियमित प्रकाशन होना अनिवार्यतः आवश्यक है. उसका प्रसार इतना व्यापक और आवश्यक नहीं है, जितनी कि उसमें स्तर की सामग्रियों को समाहित करना आवश्यक है. पत्रिका स्तर की होगी, और पाठकों को रुचि कर होगी तो प्रसार तो स्वतः ही हो जाएगा. लेकिन यह जरूरी है कि जितने समय तक वह निकले पूरी प्रतिबद्धता और विजन के साथ निकले. वर्तमान की अधिकांश लघु पत्रिकाएं प्रतिबद्धता और विजन की कसौटी पर खरी नहीं उतरी है. इसी लिए इन पत्रिकाओं का अस्तित्व और प्रतिष्ठा नहीं बन पा रही है. बाजार में आज हिन्दी लघु व मध्यम पत्र-पत्रिकाओं की भरमार है. आज उनमें कुछ भी छपे उसका नोटिस नहीं लिया जाता. सरकारी विभागों के नीचे से लेकर उच्चाधिकारियों को यह मालूम है कि कौन-सी पत्रिका का प्रभाव जनता और राजनैतिक नेताओं तक कितना है. उसी के अनुसार उस पत्रिका के प्रतिनिधियों और संवाददाताओं को महत्व दिया जाता है. यही मूल कारण है कि आज लघु-पत्रिकाओं की उपेक्षा और तिरस्कार हो रहा है. पुलिस

उन्हें प्रताड़ित भी कर रही है. अधिकांश पत्रिकाएं बौद्धिक और वैचारिक उत्तेजना से लगभग शून्य है. बावजूद इसके पत्रिकाएं खूब निकल रही है. इसे हम हिन्दी पत्रकारिता जगत की बिडम्बना ही कहेंगें.

इस अवमूल्यन पर गहरी चिंता व्यक्त करते हुए 'अकार' कें सम्पादक श्री गिरिराज किशोर कहते है-'इस विषय पर दो-तीन बातें विचारणीय है. आज देश में अनगिनत नवोदित लेखक और पत्रकार हैं, जो छपना या प्रसारित तो होना चाहते है, मगर उनमें मौलिक रचनात्मक सोच शून्य ही हैं. आधुनिक परिवेश और सोच के कारण कमजोर भी हैं. उनमें मिशनरी पत्रकारिता की भावनाएं कम होने के कारण उन्हें उचित स्थान नहीं मिल पाता. इन पत्रिकाओं में उल-जूलूल के अतिरिक्त कुछ नहीं होता. आज का सरकारी उच्चाधिकारी तंत्र इतना बेवकूफ नहीं है कि वह न समझे कि ऐसी पत्रिकाओं का प्रभाव जनता में कितना होगा. सच्चाई को उजागर करना ही पत्रकारिता का मूल लक्ष्य है, लेकिन देश के किसी भी समाचार-पत्र या पत्रिकाओं में उस लक्ष्य के दर्शन नहीं होते. दूसरी बात यह कि अच्छी पत्रिकाओं की छपाई इतना खर्चिला है कि उसके व्यय की वापसी की कोई गांरण्टी नहीं. सरकारी विज्ञापन या संस्थागत अनुदान ही ऐसी पत्रिकाओं के प्रकाशन में सहायक होते है. लेकिन स्वतंत्र प्रकाशन को यह सब नहीं मिलता. तीसरी समस्या अच्छे व प्रतिष्ठ लेखकों का न मिलना और मार्केट का अभाव. अच्छी पत्रिकाएं कुछ समय निकलने के बाद आर्थिक अभाव के कारण बंद हो जाती है. कुछ वामपंथी पत्रिकाएं संगठन के माध्यम से निकल तो रही हैं, लेकिन उनका रचनात्मक स्तर उच्च कोटि का नहीं होता.

देश के अनेक प्रबुद्ध लेखक पत्रकारिता के असली नब्ज़ पकड़ कर उसकी ओर इशारा करते हैं. सत्य यही है कि वर्तमान परिवेश में पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन करना आर्थिक रूप से जितना लाभकारी है, साहित्यिक दृष्टि से उतना अलाभकारी. पत्रिकाएं समाज का आईना होती है. आज लोग पत्रिकाओं में बड़े-बड़े विज्ञापन और आर्थिक अनुदान के जुगाड़ में रहते हैं. कई पत्रिकाएं तो निकलती ही तब है जब उन्हें छपाई खर्च का विज्ञापन मिल जाता है. आज अनेक पत्रिकाएं आन्दोलन, प्रबंधन और विज्ञापन के अभाव में दम तोड़ रही है.

मेरी अपनी पत्रिका 'हिन्दुस्तान की आवाज' जो चार दशक पूर्व ५० हजार प्रतियों के साथ छपता था आज मात्र पांच हजार छप रही है. ऐसी अनेक पत्र-पत्रिकाएं है जो विलुप्त होने के कगार पर खड़ी है, को बचाने की जरूरत है.

सरकार को चाहिए कि ऐसे लघु पत्रिकाओं को कागज कोटा और डीएवीपी विज्ञापन देने की व्यवस्था की जाए. दूसरा प्रश्न यह उठता है कि पत्रिका को कितने लोग पढ़ते हैं, इस बात की चिंता सम्पादकों को नहीं होती. सवाल उठता है कि आज के इलेक्ट्रानिक मीडिया के वर्चस्व काल में क्या लघु पत्रिकाओं का प्रभाव और सार्थक भूमिका है? प्रख्यात लेखक प्रो० गोपेश्वर सिंह कहते है-'अधिक से अधिक पत्रिकाओं के प्रकाशकों का मैं हार्दिक स्वागत सम्मान करता हूं. हिन्दी में जो भी लिखा जा रहा है, वह बंगला और तमिल २५वर्ष पहले लिखा जा चुका था. उन पूर्व प्रकाशित रचनाओं को तोड़-मरोड़ कर आज पुनः प्रकाशित किया जा रहा है. लघु पत्र-पत्रिकाएं देश के हर छोटे-बड़े शहरों से प्रकाशित हो रही है, हर पत्रिका की अपनी शैली और प्रतिबद्धता और संगठित टीम है, जो सामाजिक जागरुकता का वातावरण बनाने में अपनी भूमिकाएं अदा तो कर रही हैं, मगर उनकी सोव भारती संस्कृति, साहित्य और राजनैतिक परिदृश्य से अलग है. जो वास्तविकता से कोसो दूर होती है.

मेरा तो यह मानना है कि आज जो पत्रिकाएं प्रकाशित हो रही है उनकी भूमिका उन गैर-राजनैतिक संगठनों की तरह है जो चुनाव से अलग होकर जल-जंगल और जमीन की लड़ाई में उलझ गई है. यदि उनकी प्रशंसा छपती है तो उन पत्रिकाओं का समाज में कोई प्रभाव नहीं रह जाता. दरअसल बड़े घरानों की पत्रिकाएं गरीब वर्ग की गतिविधियों को पत्रिका में स्थान नहीं

> अच्छी पत्रिकाओं की छपाई इतनी खर्चिली है कि उसके व्यय की वापसी की कोई गांरण्टी नहीं.
>
> अच्छी पत्रिकाएं कुछ समय निकलने के बाद आर्थिक अभाव के कारण बंद हो जाती है.
>
> पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन करना आर्थिक रूप से जितना लाभकारी है, साहित्यिक दृष्टि से उतना अलाभकारी.
>
> लघु पत्रिकाओं को कागज कोटा और डीएवीपी विज्ञापन देने की व्यवस्था की जानी चाहिए.

दलितों की हितैषी मायावती के पास है १११ करोड़ रुपये की सम्पत्ति

लखनऊ. मायावती सरकार की अवैध कमाई पर हमेशा ही चर्चा होती रही है. सत्ता में आने के बाद बसपा प्रमुख मायावती जब १३ मई २००७ को उत्तर प्रदेश की चौथी बार मुख्यमंत्री बनी थीं तब उनकीं संपत्ति ५२ करोड़ २७ लाख रुपये थी जो पांच साल में बढ़कर १११ करोड़ ६४ लाख रुपये हो गयी है. मायावती के राज्यसभा के लिये नामांकन पत्र दाखिल करने में दिये हलफनामें के अनुसार उनकी संपत्ति पिछले दो साल में २४ करोड़ बढ़ी है जबकि पहले के तीन साल में इसमें ३५ करोड़ रुपये का इजाफा हुआ था. मायावती की संपत्ति २०१० में ८७ करोड़ रुपये थी. उन्होंने २००७ में मुख्यमंत्री बनने के वक्त अपनी कुल संपत्ति ५२ करोड़ २७ लाख रुपये दिखायी थी. बसपा प्रमुख के पास दो लाख बीस हजार रुपया नगद है और १४ करोड़ ६४ लाख रुपये बैंक में जमा है, उनके पास न तो कोई वाहन है और न कृषि या गैर कृषि योग्य जमीन. मायावती के पास जीवन बीमा की कोई पालिसी भी नहीं है. हलफनामें के अनुसार मायावती के पास दिल्ली के कनाट प्लेस में दो व्यावसायिक संपत्ति है जिनकी कीमत १८ करोड़ ८४ लाख रुपये है. उनके नाम नई दिल्ली के सरदार पटेल मार्ग पर बंगला है जिसका नंबर २३ और २४ हैं. बंगले की कीमत ६१ करोड़ ८६ लाख रुपये है. उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ के ६ माल एवेन्यू के बंगले की कीमत १५ करोड़ ६८ रुपये हैं. दिल्ली के बंगले की खरीद की तारीख ६ जुलाई २००६ दिखायी गई है जबकि लखनऊ का बंगला ०३ नवंबर २०१० को खरीदा गया हैं. उन्होंने २०१०-११ के आयकर रिर्टन में अपनी संपत्ति ६ करोड़ ५१ लाख ५३ हजार ५३८ रुपये दिखायी थी. उनके पास एक किलो ३४ ग्राम सोना और ३८० कैरेट के हीरे के जवाहरात है. सोने और हीरे के आभूषण की कीमत ६६ लाख ५३ हजार रुपये हैं. मायावती के पास १८ किलो पांच सौ ग्राम के चांदी के डीनर सेट हैं जिनकी कीमत ६ लाख ३२ हजार हैं. यही नहीं मायावती रिवाल्वर भी रखती हैं जिसकी कीमत पांच हजार तीन सौ नब्बे रुपये हैं.

देते हैं. ऐसी पत्रिकाओं का कोई चरित्र नहीं है. मैं उस दिन का स्वागत करने की तैयारी में हूं जब हर गांव से एक पत्रिका निकले जिसमें वहां के लोग छपे, वहां के लोग पढ़े. आज लघु पत्रिकाओं से सामाजिक जागरुकता की उम्मीद करना व्यर्थ सा लगता है.

वरिष्ठ आलोचक श्री नन्द किशोर का कहना है कि श्री गणेश शंकर विद्यार्थी ऐसे पुरोधा थे जिन्होंने कभी पूजीवादी प्रकाशनों का समर्थन नहीं किया और श्री देवव्रत सुमन हमेशा पूंजीवाद और फिरंगी सरकार के विरुद्ध लिखते रहे. आज का पत्रकार जगत इन्हें भूल चुका है. जिन्होंने मिशनरी पत्रकारिता की नींव रखी थी और लघु पत्रिका 'वन्दे मातरम्' निकाली थी. १६३२ में हमारे देश में हिन्दी कम्पोजिंग की व्यवस्था नहीं थी. श्री शंकर दयाल मृदगल ने सर्वप्रथम हिन्दी टाइप फाउन्डरी इलाहाबाद में स्थापना की थी. देश आजाद होने के बाद यह पत्रिकाएं व्यक्तिगत राग-द्वेष का माध्यम बनते हुए शत्रुता व मित्रता निवाहने लगीं. इसी वर्ष लखनऊ से नवजीवन और दिल्ली से हिन्दुस्तान-हिन्दी का प्रारंभ हुआ तो कानपुर से 'जागरण साप्ताहिक' का प्रकाशन शुरु किया डोरी लाल महेश्वरी ने. आज यह दैनिक जागरण के रूप में प्रख्यात है. सबसे दुःखद बात यह है कि आज के पत्रकारों ने इन पत्रिकाओं को अपना व्यवसाय बना लिया और नौकरी न करने की क्षतिपूर्ति इन पत्रिकाओं से होने लगी.

आज लघु पत्र-पत्रिकाओं के संपादकों को सारी ऊर्जा भारी भरकम विज्ञापन जुटाने में खर्च करना पड़ता है. इसका परिणाम यह हुआ कि पत्रिकाओं में रचनात्मक सामग्रियां कम होती गई और विज्ञापनों से पत्रिका मोटी होती चली गई.

विश्व हिन्दी सम्मेलनः विश्व हिन्दी दिवस

गांधीजी समझ गए थे कि भारतीयों की एकता व अखंडता को सुनिश्चित करने के लिए राष्ट्र की एक भाषा होना जरुरी है. इसी उद्देश्य को ध्यान में रखकर उन्होंने १९३६ में वर्धा में राष्ट्रभाषा प्रचार समिति की स्थापना की थी.

विश्व हिन्दी सम्मेलनों की श्रृंखला की वैचारिक शुरूआत सितम्बर १९७३ में हुई.

पिछले कई दशकों में कोई भी नोबेल पुरस्कार भारत में नहीं आये जबकि इजराइल जैसे छोटे से राष्ट्र ने १९४८ से अब तक १२ पुरस्कार अपनी झोली में डाल लिया है. वहां का सारा काम वहां की राष्ट्रभाषा हिब्रू में होता है.

✍वीरेन्द्र कुमार यादव
सदस्य, हिन्दी सलाहकार समिति, पटना, बिहार

९ जनवरी १९१५ को २१ वर्ष के प्रवास के बाद गांधीी आते ही भाषा के काम में लग गए. वे भली प्रकार समझ गए थे कि भारतीयों की सार्वभौमिक एकता-अखंडता एवं पहचान को सुनिश्चित करने के लिए राष्ट्र की एक भाषा होना जरुरी है. इस कार्य की पहल उन्होंने १९१८ में दक्षिण भारत से शुरु की जहां उन्होंने १९२८ में दक्षिण हिन्दी प्रचार सभा की स्थापना की. राष्ट्र में हिन्दी को जन-जन तक पहुंचाने एवं भारतीयों को जोड़ने के लिए यह कदम उठाया गया था.

'विश्व हिन्दी सम्मेलन के आयोजन की कल्पना का मूल आधार उन भावनाओं से अनुप्राणित होता है, जिनके अन्तर्गत महात्मा गांधी ने वर्ष १९३६ में भारत के हिन्दीतर राज्यों में हिन्दी के प्रचार-प्रसार के उद्देश्य से अपनी कर्मस्थली वर्धा में राष्ट्रभाषा प्रचार समिति की स्थापना की थी. इसी वर्ष नागपुर में हिन्दी साहित्य सम्मेलन का अधिवेशन हुआ और इस अधिवेशन में जिसके अध्यक्ष डॉ० राजेन्द्र प्रसाद थे, हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए एक व्यापक रुपरेखा तैयार की गई थी. इस अधिवेशन में राजेन्द्र प्रसाद, महात्मा गांधी, पं. जवाहर लाल नेहरु, पुरूषोत्तम दास टंडन, सेठ जमनालाल बजाज, काका साहेब कालेलकर, माखन लाल चतुर्वेदी तथा कई अन्य सुविख्यात विद्वानजन शामिल थे.'

विश्व हिन्दी सम्मेलनों की वर्तमान श्रृंखला की वैचारिक शुरूआत सितम्बर १९७३ में राष्ट्रभाषा प्रचार समिति के नायक अनंत गोयल शेवड़े की प्रेरणा एवं मधुकर राव चौधरी के प्रयास से हुई थी. तत्कालीन प्रधानमंत्री स्व० इंदिरा गांधी ने प्रस्ताव का अनुमोदन किया और भारत सरकार ने मई १९७४ में पूर्ण सहयोग एवं समर्थन का आश्वासन दिया. इस प्रकार भारत की सार्वभौमिक एकता-अखंडता के लिए तथा हिन्दी को विश्वव्यापी बनाने के उद्देश्य से १० जनवरी १९७५ में नागपुर से विश्व हिन्दी सम्मेलन की जो शोभा यात्रा प्रारंभ हुई उसने जुलाई २००७ में न्यूयार्क में अपना आंठवा पड़ाव पुरा कर लिया. १० जनवरी प्रथम विश्व हिन्दी सम्मेलन के शुरुआत होने के उपलक्ष्य में भारत सरकार के विदेश मंत्रालय द्वारा मेरे प्रस्ताव पर विश्व हिन्दी सम्मेलन समन्वय समिति की बैठक में दिनांक ८ जून २००५ को १० जनवरी को विश्व हिन्दी दिवस मनाने के लिए स्वीकृत हुआ. एक ऐतिहासिक क्षण की शुरुआत हुई. दुनिया भर के भारतीय दुतावासों में २००६ से विश्व हिन्दी दिवस मनाना प्रारंभ हुआ.

अब तक इन सम्मेलनों ने अपने उदेश्यों की प्राप्ति में केवल आंशिक सफलता ही प्राप्त की है. जैसे महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय की स्थापना हो चुकी है. इसके बाद हैदराबाद में स्थापित अंतराष्ट्रीय उर्दू विश्वविद्यालय नित्य प्रतिमान स्थापित कर रहा है.

विश्व हिन्दी सचिवालय की स्थापना मारीशस में की गयी है. इसे भी सुचारू रूप में व्यवस्थित कर गतिशीलता प्रदान करने की आवश्यकता है.

हमें एक समुचित एवं सुनियोजित योजना बनानी है जिससे भारतवर्ष सबसे शक्तिशाली राष्ट्र के रूप में आगे आ सके. योजना को मूर्तरूप देने के लिए भाषायी समन्वय के साथ हमारी शिक्षा को भारतीय भाषाओं के माध्यम से होना पड़ेगा. और यह तब तक संभव नहीं हो पायेगा, जब तक हम संपूर्ण भारत के लिए एक संपर्क भाषा का चयन, प्यार-स्नेह एवं समरसता के सिद्धातों पर नहीं कर लेते हैं.

मेरे विचार से यह एक चिंता का

विषय है कि भारत जैसा राष्ट्र, जो मनीषियों एवं संतुलित विचारकों से भरा हुआ है. पिछले कई दशकों में कोई नोबेल पुरस्कार किसी भी क्षेत्र में नहीं अर्जित कर पाया है. जबकि इजराइल जैसे छोटे से राष्ट्र ने ६४८ से अब तक १२ ऐसे पुरस्कार अपनी झोली में डाल लिया है. यह राष्ट्र बड़े ही गर्व के साथ अपना सारा काम-काज अपनी राष्ट्रभाषा हिब्रू में करता है. अगर भारत की अनेक भाषाओं को सही बढ़ावा दिया जाता है तो कोई कारण नहीं है कि हम कई अन्य गुरूवर टैगोर जैसे साहित्यकारों को खोज न निकाले. मुझे पूरा विश्वास है कि देश की आर्य एवं द्रविड़ भाषाओं में ऐसे अनेक साहित्यकार अब भी हैं जो सही वातावरण एवं प्रोत्साहन के मिलते ही नोबल पुरस्कार भारत को दिला सकते हैं.

अंग्रेजी भाषा के बढ़ते हुए वर्चस्व ने भारत की समस्त भाषाओं को कमजोर बनाया है जिसके कारण राष्ट्रीय एकता कमजोर हुई हैं. हिन्दी हमारे मन में है, लेकिन वह अब हमारे व्यवहार में होगी तथा आने वाली पीढ़ियों में भी हिन्दी के प्रति प्रेम बना रहे.

विश्व हिन्दी सम्मेलन के समय हमें पूर्व स्वीकृत प्रस्तावों के क्रियान्वयन पर गम्भीरतापूर्वक विचार करना होगा तथा एक क्रियान्वयन समिति के गठन के साथ कार्यक्रमों को समयबद्ध बनाना होगा. वास्तव में तभी विश्व हिन्दी सम्मेलनों के उद्देश्यों को पूर्ण करने में गति आयेगी. हम वे ही प्रस्ताव स्वीकार करें जिन्हें हम क्रियान्वित कर सकें, अन्यथा प्रस्ताव के लिए प्रस्ताव स्वीकार करने का कोई औचित्य नहीं है.

हानिकारक साफ्ट ड्रिंक्स

'मैया मोरी मैं नहीं माखन खायो' वाले देश में सॉफ्ट ड्रिंक लोगों के दिलों-दिमाग को इस कदर दूषित कर चुके हैं कि अब लोग दूध को भी भूल गये हैं. एक समय लोग दारा सिंह का उदाहरण देकर अपने बच्चों से कहते थे देखों, वह दूध पीता है, घी खाता है. इसलिए तो वह बड़े-बड़े पहलवानों को कुछ ही समय में धूल चटा देता है. यह सुनकर बच्चे दूध, घी के प्रति आकर्षित होते थे तथा स्वस्थ एवं हृष्ट-पुष्ट रहते थे. आज के बच्चे टी.वी. पर कुछ क्रिकेट के खिलाड़ियों और फिल्मी कलाकारों को सॉफ्ट ड्रिक्स पीकर अपना कमाल दिखाते हुए देखते हैं. उनको तो एक-एक विज्ञापन के कई लाख रुपये मिलते हैं. परंतु नादान बच्चे समझते है कि यह सब सॉफ्ट ड्रिंक का चमत्कार है. इसलिये हम भी पियेंगे तो ऐसे बन जाएंगें. सॉफ्ट ड्रिंक्स की बोतलों को खाली करने वाले शायद यह नहीं जानते कि वे अपने स्वास्थ्य के साथ खिलवाड़ कर ही रहे हैं साथ ही अपने शरीर में जहर घोलकर कमजोर बना रहे हैं. है न चौकाने वाली बात. शीतल पेय की एक बोतल को शौचालय में उड़ेल दो. एक घण्टे बाद आप पायेंगे कि उसने फिनाइल की तरह शौचालय को साफ कर दिया. कपड़े में दाग लगने पर उसे शीतल पेय तथा साबुन से धोओ कुछ देर बाद ग्रीस तक के दाग भी ढूंढते रह जाओगें. सॉफ्ट ड्रिक्स के रूप में लोग अपने पसीने की कमाई से अपने लिये जहर खरीद लेते हैं. हानिकारक व दूषित शीतल पेयों की अपेक्षा घर में बनाया नीबू का शर्बत, फलों का रस एवं ताजी लस्सी शुद्ध सात्विक एवं पौष्टिक होती है. अतः समझदार लोग विज्ञापन बाजी से प्रभावित न होकर अपने घर व स्वास्थ्य दोनों को विनष्ट होने से बचाये तथा औरों को भी सही समझ दें.

✍**सुरजीत सिंह साहनी**, कोटा, राजस्थान

डॉ० अरुण आनन्द

कहानी

वह महिला

रामदेव प्रसाद शर्मा,
खगड़िया, बिहार

बात उस समय की है जब मैं टी.एन.वी. कॉलेज भागलपुर के छात्र के रूप में नया बाजार खादी भंडार मं अग्रज जी के साथ रहता था. उनके सहयोगी कार्यकर्ता श्री शशिधर शर्मा, जो मेरे हमउम्र थे, मेरे बहुत बड़े साथी बन चुके थे. उन्होंने एक होली की छुट्टी में घर नहीं जाने का निर्णय किया. और मैंने भी कहा-'इस बार मैं भी घर नहीं जाऊंगा.' भैयाजी से मैंने कहा-'परीक्षा निकट है. यहीं रहकर मैं अध्ययन करूंगा.' भैयाजी ने मेरी अच्छाई समझकर हामी भर दी और वे घर चल दिये.

थोड़ी देर बाद शशि के घर से मेरे नाम एक चिट्ठी आई, जो उनकी पत्नी 'राधा' ने लिखी थी-'देवर जी! आपके भैया बहुत दिनों से घर नहीं आते हैं. इस बार होली में अवश्य भेज दें. आप मेरे अपने देवर से भी बढ़कर हैं. आपकी बात को अवश्य मानेंगें.' -आपकी भाभी, राधा

उस समय शशि का विछोह सह पाना मेरे लिए कठिन था, पर भाभी राधा के निवेदन को नजरअन्दाज भी नहीं कर सकता था. अतः मैंने एक ब्लेड ली और शशि के ओंठ की ओर संकेत कर कहा-'इसे चीड़ देता हूं.'

'क्यों?'

'क्योंकि इसकी उपयोगिता भाभी के पास है, पर तुम जाते ही नहीं' मैंने कहा.

'ओह ऐसी बात है? तब तो मुझे जाना ही पड़ेगा, पर तुम अकेले कैसे रहोगे?'

'रह लूंगा मैं.'

हम दोनों बाजार गये. उसने मेरी पसंद से भाभी के कपड़े और श्रृंगार के साधन खरीदे. दूकानदार जब दूसरी चीज को अच्छी बताता तो मैं अपनी पसन्दगी पर अड़ जाता था और दुकानदार सामान देता हुआ मजाक करता-'दिल लगी दीवार से तो परी से क्या काम?'

उसे मैंने ग्राम पसई, संताल परगना वर्तमान झारखंड बस स्टैंड बौंसी जाने के लिए भागलपुर उलटा पुल के पार बस में चढ़ा दिया. अन्त में उसने अंगुली से एक कतरा खून निकालकर मेरी ओंठ पर लगाया और मेरी अंगुली से एक बूंद रक्त निकाल कर अपनी ओंठ पर. जब तक गाड़ी खुल नहीं गई तब तक मैं वहीं खड़ा रहा.

गाड़ी खुलने के बाद मैं डेरा की ओर लौटा, पर मेरा मन काफी व्यथित होने लगा. छुट्टी के बाद वह तुरंत लौट आयेगा, इतनी भी प्रतीक्षा करने को तैयार नहीं था और अपनी भावना व्यक्त करने के लिए चिट्ठी लिखने के लिए अन्तरदेशीय पत्र लेने आर.एम. एस. चला गया.

काउन्टर पर जाकर मैंने रूपये बढ़ाये और अन्यत्र जगह भेजने के ख्याल से भी पोस्टकार्ड, अन्तर्देशीय पत्र एवं लिफाफे मांगें. ड्यूटी पर तैनात प्रभारी ने मुझे वांक्षित सामग्री दी और शेष पैसे वापस करने के क्रम में उसने कुछ खुदरे पैसे देने को कहे. उस समय मेरा दिमाग इतना विचलित था कि उसे मैं कुछ भी नहीं कह सका.

उस समय एक सुन्दर महिला मुझसे पहले से वहां खड़ी-खड़ी पत्र लिख रही थी. उसके लौटाये पैसे वहीं काउन्टर पर पड़े थे. उसने मेरी मनस्थिति को भांपकर अपने पैसे में से वांछित पैसे अंगुली से प्रभारी की ओर धकेल दिये. प्रभारी ने मुझे डाक सामग्री और पैसे लौटाये. मैंने लिये और बाहर निकला. बाहर आकर मुझे ख्याल आया कि मेरी जेब में ही खुदरा पैसे हैं. अगर यह नहीं भी रहता तो जैसे उस महिला ने अपने पैसे दिये वैसे मैं भी तो अपने कुछ पैसे छोड़ सकता था.

उस महिला को पैसे वापस करने के लिए जब मैं अन्दर गया तो उसे नहीं देखा. पता नहीं, वह किधर और किस राह से गयी? जबकि वही एक मात्र राह थी, जिससे मैं गया और तुरंत ही.

जब कभी वह घटना मुझे याद आती है तो उस महिला की सुन्दर छवि सामने खड़ी नजर आती है और उसकी सदाशयता तथा परोपकारी भाव से अभिभूत हुए बिना नहीं रहता.

शीघ्र संदेश सम्प्रेषण रचनाएं

कर सकें नाज जिस रिश्ते पर वो दोस्ती है,/छूपा ले हर राज को वो दोस्ती है,/जिंदगी का हर साज दोस्ती है, जो है हर दर्द का इलाज, वो अल्फाज दोस्ती है.

++

५वीं कक्षा का छात्र अपने दोस्त से-कितना मुश्किल है स्कूल की टीचर से प्यार करना

दोस्त-क्यूं?

लव लेटर भेजा था होमवर्क समझकर चेक कर दिया.

जितेन्द्र सागर-८६५७१२४४६०

पत्रिका के संपादक को पितृ शोक

विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान के संस्थापक अध्यक्ष रहे

पवहारी शरण द्विवेदी का निधन

जी.पी.एफ.सोसायटी के अध्यक्ष, विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान के संस्थापक अध्यक्ष रहे, विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान के सचिव व 'विश्व स्नेह समाज' मासिक के संपादक डॉ० गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी के पिता एवं सुप्रसिद्ध समाजसेवी श्री पवहारी शरण द्विवेदी का निधन २५ मार्च २०१२ को ७८ वर्ष की उम्र अपने पैतृक आवास ग्राम-टीकर, देवरिया, उत्तर प्रदेश में हो गया. २००३ में लकवा ग्रस्त होने के बाद वे अपने पैतृक आवास में ही रह रहे थे. बाहर की यात्राएं कभी-कभार ही किया करते थे. घर से ही पत्रों व दूरभाष के माध्यम से अपनी गतिविधियों को अंजाम दिया करते थे. स्व० द्विवेदी अपने पीछे तीन लड़किया और दो लड़के छोड़ गये है. दो लड़को में बड़े पुत्र डॉ० गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी जिनके एक बेटा व एक बेटी है व छोटा पुत्र गिरिराज द्विवेदी जिनके दो लड़किया व एक लड़का है.

विदित हो कि श्री द्विवेदी समाज सेवा के कार्यो में आजीवन बढ़ चढ़कर भागीदारी निभाते रहे हैं. अपने जीवन काल में स्व० द्विवेदी ने कई निर्धन बच्चों को शिक्षा दिलाकर उन्हें अपने पैरों पर खड़ा होने में पूरी सहायता की. कई गरीब लड़कियों की शादी करवाने में भी महत्ती भूमिका अदा की. गांव के कई मन्दिरों को जीर्णोदार करवाने में आर्थिक व सामाजिक रुप से काफी मदद की. जिससे एक धरोहर को बचाया जा सके. उनकी समाज सेवा के क्षेत्र में किए गए उल्लेखनीय कार्यो का योगदान था जो उनकी मृत्यु होने पर आस-पास के कई गांवो के हजारों लोग एकत्र हो गए. उन्हीं के समाजिक कार्यो से प्रेरणा लेकर उनके ज्येष्ठ पुत्र डॉ० गोकुलेश्वर द्विवेदी ने समाज सेवा के क्षेत्र में कदम रक्खा. डॉ० द्विवेदी के सामाजिक कार्यो में भी उनकी महत्ति भूमिका रहती थी. डॉ० द्विवेदी को उनके पिता अक्सर सलाह दिया करते थे. श्री पवहारी शरण द्विवेदी के निधन से सबसे अधिक धक्का उनके बड़े पुत्र डॉ० गोकुलेश्वर द्विवेदी को ही लगा है. डॉ० द्विवेदी के शब्दों में-'मेरे सर से पितृ-छाया तो नहीं हीं रही साथ में मैं मैंने अपना एक मार्गदर्शक, गुरू भी खो दिया है.'

स्व० द्विवेदी के भतीजे पुष्पेन्द्र द्विवेदी ने स्मरण करते हुए कहा-'चाचा अपने चार भाईयों में अंतिम जीवित बचे थे. अब पिता की श्रेणी का कोई हमें मार्गदर्शन देने के लिए शेष नहीं रहा.'

समाज सेवियों को पवहारी शरण द्विवेदी स्मृति समाज सेवी सम्मान

संस्थान के संस्थापक अध्यक्ष रहे स्व० पवहारी शरण द्विवेदी की स्मृति में इस वर्ष से समाज सेवा में उल्लेखनीय योगदान करने वाले समाज सेवियों को पवहारी शरण द्विवेदी स्मृति समाज सेवी सम्मान प्रदान किया जाएगा. इस सम्मान में **पांच हजार एक रुपये नगद,** स्मृति पत्र प्रदान किए जाएंगें. प्रतिभागियों को अपने समाज सेवा का प्रामाणिक विवरण, सचित्र जीवन परिचय, एक जवाबी टिकट लगे पता लिखे लिफाफे के साथ संस्थान के कार्यालय कार्यालय में ३० नवम्बर २०१२ तक भेजना होगा.

सचिव

विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान

:एल.आई.जी-६३, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद-२११०११, उ.प्र.

मो० ०६३३५१५५६४६

ईमेल-sahityaseva@rediffmail.com

www.facebook.vsnehsamaj पर भी जानकारी उपलब्ध है

चिन्तन

सुख की अनुभूति के लिए अनिवार्य है दुख का आस्वादन भी

✍सीताराम गुप्ता, दिल्ली

एक कहावत है जितने दिन जेठ तपता है उतने ही दिन सावन बरसता है. जेठ में जितने दिन पुरवाई चलती है, हवा ठंडी हो जाती है उतने ही दिन सावन में धूल उड़ती है. जेठ नहीं तपेगा तो सावन भी नहीं बरसेगा. यह एक वैज्ञानिक सत्य भी है. लेकिन एक बात ये भी है कि यदि ग्रीष्म कष्टदायक है तो वर्षा आनंददायक. यही बात मनुष्य के जीवन में सुख-दुख के संबंध में भी उतनी ही सटीक है. ज्येष्ठ कष्ट का प्रतीक है तो श्रावण आनंद का लेकिन एक के बिना दूसरे की प्राप्ति असंभव है. इसी प्रकार दुख के बिना सुख की प्राप्ति या अनुभूति भी असंभव है.

व्यक्ति तथा समाज दोनों के विकास के लिए परस्पर विरोधी भावों, शक्तियों अथवा ऊर्जा की उपस्थिति अनिवार्य है. किसी भाव के कारण ही अभाव का तथा अभाव विशेष के कारण ही भाव विशेष का महत्त्व है. असत की उपस्थिति के अभाव में सत का मूल्यांकन कैसे संभव है? मृत्यु, अंधकार, विषमता, विरह अथवा अपमान आदि के उपस्थित होने पर ही जीवन या अमरता, प्रकाश, अनुकूलता, मिलन अथवा मान-सम्मान के भाव की अनुभूति की जा सकती है. इसी प्रकार यदि दुख नहीं आएगा तो सुख भी नहीं आएगा क्योंकि दुख की अनुभूति के बाद ही सुख की अनुभूति संभव है. जितना लंबा दुख उतना ही दीर्घ सुख. जितना गहरा घाव ठीक होने पर उतना ही घना सुख. दोनों एक दूसरे के पूरक हैं. एक के अभाव में दूसरे का अस्तित्व ही नहीं हो सकता.

दुख के अभाव में कैसा सुख? वस्तुतः दुख का अभाव ही सुख है अतः सुख के लिए दुख की अनुभूति अनिवार्य है. यदि सारे साल एक जैसा मौसम ही बना रहे तो जीवन कितना नीरस हो जाए. रोज एक जैसा खाना, एक जैसे कपड़े अथवा एक जैसी दिनचर्या हो जाए तो इस एकरसता में कैसा आनंद? परिवर्तन तथा उतार-चढ़ाव हमारे जीवन को रंगों से भर देते हैं. परिवर्तन के अभाव में मनुष्य न तो आनंदित हो सकता है और न आगे ही बढ़ सकता है।

ग्रीष्म या वर्षा हो अथवा पतझड़ या वसंत ये एक-दूसरे के विरोधी नहीं अपितु पूरक हैं. एक के अभाव में दूसरे का आनंद कहाँ? यही स्थिति सुख-दुख के साथ भी जुड़ी है. दुख नहीं तो सुख नहीं और सुख नहीं तो दुख नहीं. जिसने कभी दुख नहीं देखा केवल सुख ही सुख देखा उसके लिए सुख की क्या कीमत? सुखों की मात्रा बढ़ाते जाओ तो अच्छा लगेगा वरना जीवन नीरस हो जाएगा. सुख-सुविधाओं का अंत नहीं लेकिन मनुष्य की सीमा है. सुख-सुविधाओं में ठहराव आ गया तो जीवन में नीरसता आ गई और सुख-सुविधा छिन गई तो दुख ही दुख. किसी से कोई सुविधा छीन लो तो दुख और फिर से दे दो तो सुख लेकिन सुविधा की निरंतरता में सुख नहीं रहता. सुख की अनुभूति के लिए अनिवार्य है दुख की अनुभूति भी. सुख-दुख मनुष्य मन की सापेक्ष अवस्थाएँ हैं.

आप ध्यानपूर्वक अपने जीवन में घटित दुखों का अवलोकन कीजिए. हमें जीवन में जाने कितने दुख और कष्ट झेलने पड़ते हैं. अवमानना सहनी पड़ती है. उनकी तीव्रता से जूझना पड़ता है. उन्हें दूर करना होता है. यदि हम अपने जीवन में आने वाले कष्टों का विश्लेषण करें तो पाते हैं कि कुछ कष्ट या कोई कष्ट विशेष जीवन में सबसे ज्यादा पीड़ित करता रहा लेकिन साथ ही ये भी पाते हैं कि इस एक बड़े कष्ट के कारण हम असंख्य छोटे-छोटे कष्टों को भूल गए अर्थात् हर कष्ट अपने से छोटे कष्टों को गौण कर देता है. हर परेशानी दूसरी परेशानियों को समाप्त कर देती है. जिसे हम बड़ी परेशानी मानते हैं यदि वह न होती तो इससे छोटी परेशानी भी तब कम कष्टदायक न होती लेकिन बड़ी परेशानियों के कारण हम छोटी परेशानियों से उबर जाते हैं जो हमारे आनंद के लिए ही नहीं उन्नति के लिए भी अनिवार्य है.

कष्ट और आनंद या दुख और सुख वस्तुतः कोई अवस्था विशेष नहीं अपितु तुलनात्मक अवस्था है. सौ रुपये का नुकसान हो गया तो कम दुख और हजार का हो गया तो ज्यादा दुख लेकिन दस हजार का नुकसान हो गया तो सौ और हजार के नुकसान को भूल गए. बड़े नुकसान के दुख ने छोटे नुकसान के दुख को बौना कर दिया, महत्वहीन बना दिया. हजार रुपये के नुकसान ने छोटे नुकसान को सहने में सक्षम बना दिया. कष्टों से जूझने की क्षमता का विकास कर देता है दुख. जितना बड़ा दुख उतना ही क्षमतावान मनुष्य. दुख से भागो नहीं, उसे स्वीकारो, चुनौती के रूप में लो, मुकाबला करो. यह मानसिकता उर्जस्विता प्रदान करेगी. संघर्ष भी सुख देगा. दुख की समाप्ति पर असीम आनंद की प्राप्ति होगी.

आपका युवा पुत्र बहुत नेक और चरित्रावान है. आप उस पर जान छिड़कते हैं. वह भी परम आज्ञाकारी और पितृभक्त है. किसी दिन वह सिगरेट मुँह से लगाए दृष्टिगोचर होता है. आपको लगता है सारे किये कराये पर पानी फिर गया. आपके दुखों की सीमा नहीं रहती. आप उसे किसी भी कीमत पर माफ नहीं करते. कुछ दिन बाद वही पुत्र किसी उत्सव के दौरान प्याला हाथ में लिए दीख पड़ता है. आपका दुख कई गुना बढ़ जाता है. आप उसे हर बात के लिए माफ कर देते हैं. धूम्रपान के लिए भी माफ कर सकते हैं लेकिन मदिरापात्र हाथ में लेने के लिए नहीं. लेकिन पास जाने पर तस्वीर का रुख़ ही बदल जाता है. पात्र में मदिरा नहीं अपितु फलों का रस है. आपका दुख दूर हो जाता है और सुख की तरंगें हिलोरे मारने लगती हैं लेकिन यह सब हुआ दुख की अनुभूति के कारण ही. दुख नहीं होता तो इतना सुख भी नहीं होता चाहे वह काल्पनिक ही क्यों न हो. वस्तुतः जिसे हम दुख कहते हैं वह भी काल्पनिक है और जिसे हम सुख कहते हैं वह भी कल्पना लोक से अधिक कुछ नहीं है.

हम कष्टों और समस्याओं से पलायन कर स्वयं अपने सुखों से दूर होते चले जाते हैं. असीमित उपभोग द्वारा भी हम अपने सुखों को कम कर देते हैं. शरीर को जितना अधिक आराम और सुविधाएँ देते हैं वह उतना ही निष्क्रिय और जड़ होता जाता है. परिश्रम अथवा व्यायाम करेंगे तो थोड़ा कष्ट तो जरूर होगा पर स्वस्थ शरीर का सुख भी मिलेगा. कम खाएँगे तथा भूख लगने पर ही खाएँगे तो भोजन के स्वाद का सुख भी मिलेगा.

नारी अबूझ पहेली

✍ललित नारायण उपाध्याय

नारी आदिकाल से अनबूझ पहलेी रही है. शास्त्र कहते हैं-स्त्री चरित्रम् पुरूषस्य भाग्यम् देवो न जानति कुतों मनुष्य' और आदि शास्त्राकार नारी की चारित्रिक गहराई तथा चरित्र को अनबूझ मानता आया है. जिसे देवता भी नहीं जानते ऐसा है नारी चरित्र, जो गहरा अकूत और अथाह हैं.

सुविख्यात विचारक कन्फूशियस कहते है- नारी संसार का सार है. दूसरी ओर हारग्रेन कहते हैं- तारे आकाश की कविता है तो स्त्रियां पृथ्वी की. नारी प्रेममय है. एक कहावत कहती है-प्रेम को तौलने में नारी का तराजू कभी गलती नहीं करता तो दूसरी ओर कहा जाता है नारी अनाड़ी नहीं हैं, नारी धनवन्तरी जैसे वैद्य की मां है. वह नाड़ी देखकर शरीर की बात जान सकते हैं किंतु नारी आपकी सांसों से आपके भाव पकड़ लेती है कि आप प्यार करने आए है या ठुकराने या ठगने.

एक अज्ञात कहावत-नारी की सारी स्थितियों को यों विश्लेषित करती हैं. काम में दासी, संभोग में वैश्या, भोजन कराते समय जननी और विपदा में बुद्धि देने वाली स्त्री है. ऐसी स्त्री संसार में दुर्लभ है. एक उक्ति कहती है-पति के लिए चरित्र, संतान के लिए ममता, समाज के लिए दया तथा जीव के लिए करूणा संजोने वाली का नाम नारी है. कहते हैं-पुरुषों में दृष्टि होती है, नारियों में अंतदृष्टि. उक्ति कहती है-स्त्री का संग नहीं सत्संग है. नारी पुरुष के ऊपर राज्य करती है प्रेम से. वासनामय प्रेम से नहीं, सेवामय से.

पता नहीं मरते दम तक भी पुरुष, पुरुष रहता है या नहीं किंतु कहावत है स्त्री, स्त्री ही रहती है. वह मरते दम तक लज्जा या हया कभी नहीं छोड़ती. अब कुछ उक्तियों और कहावतों के सार के रूप में देखिए-

खामेशी ही स्त्री का सच्चा जेवर है।

शेख सादी कहते हैं इस मकान के सुख के दरवाजे बंद कर दो, जिसमें से औरत की आवाज बुलंद स्वरों में निकलती है. इस तारतम्य में एक ज्ञात कहावत कहती है-वह घर दुःखी है जहां मुर्गे की अपेक्षा मुर्गी ज्यादा आवाज से बांग देती है. कुमारी नारी को कैसे रहना चाहिए वह सीख देखिए-कुमारियों को मृदुल और लजीली, सुनने में तेज और बोलने में मंद रहना चाहिए. खलील जिब्रान कहते है-औरत अपने चेहरे पर मुस्कान का बुर्का डाल सकती है, पुरुष नहीं. स्त्री को पहचानना सरल है. सोफेकिल्स कहते है-स्त्रियों का मौन उनको यथोचित लावण्य प्रदान करता है. जो स्त्री ऊंची आवाज में बोलती है, वह गृहस्थ जीवन में अपनी इज्जत खोती है.

मां पृथ्वी से भी बड़ी है, मां स्वर्ग से भी अधिक गर्व की वस्तु है, मां हर जगह जीवित है, क्योंकि हर जीवित प्राणी अपनी मां की कोख में रहकर ही जन्मता आया है. मां एक ऐसा पवित्र और सर्वोच्च संबोधन है जिसके साथ कोई धोख या छल जुड़ा नहीं होता? मनुष्य का पहला अक्षर मां हैं. इसलिए बिन मां की सेवा मनुष्य की सेवा नहीं होती है और सभी के जीवन में पहली महिला मां ही होती है. फिर भी मां आज क्यों उपेक्षा का पात्र है. आज मैं और आप जो कुछ भी है, मां के कारण है?

भ्रूण हत्या

देख रही निज लुटता जीवन, छाया घोर अन्धेरा।
हर पल जकड़े पथ में मुझको, शंकाओं का घेरा।।
मेरे जीवन की डोरी को, यूं मत नाता तोड़ो।
मैं भी जन्मू इस धरती पर कुछ अपनो से जोड़ो।।
क्यों इतनी निष्ठुर हो माता, क्या है मेरी गल्ती।
हाय विधाता कैसी दुनिया, नारी नारी को छलती।।
समझ सको तो समझो माता, मुझ विन सूना आंगन।
बहुत रुलाउंगी मैं तुमको, होगा दूभर जीवन।।
मेरी व्यथा सुनो ऐ माते, बनो न तुम हत्यारी।
जीवन दान मुझे दो माता, यही धर्म है नारी।।
मृत्यु का भय मुझे सताता, हर पल जी घबड़ाता।
पलने दो तुम मुझे गर्भ में, मुझे न मारो माता।।
लक्ष्य जीव का जन्म है लेना, क्यों मन मानी करती।
बेटी है सौगात ईश की, स्वर्ग इसी से धरती।।
पूर्व जन्म से, मुझे न मारो, मेरी तुमसे विनती।
सब कुछ बेटों को (दे) देना, मत करना मेरी गिनती।।

नेता

वोटों की खातिर बन गये, अब धन्ना सेठ फकीर।
बड़ी बड़ी बातें करते हैं, जैसे हो बड़ा जमीर।।
राजनीति करते वोटों की, खींचे जनता मध्य लकीर,
जीत कर भूले जनता को, बन जाते और अमीर।।
✍**सुश्री सुरेखा शर्मा**, गुड़गांव, हरियाणा

छोटी बनी महान!

छोटी है वह कद से आकार से
लेकिन महान है गुणों से
पर मन, गुण से छोटी है वह
हंसती हंसाती है सबको
प्यार भरी मिठास है वह
किसी को पीड़ा न देती
बड़ो को सम्मान छोटो को आशीर्वाद
देता
चिराग से बढ़कर अंगार
बन जाती है
अन्याय के आगे झुकती नहीं
अन्याय ही झुकाती है वह
बिजली बनकर चमकती है
काम करती जिम्मेदारी से अपने
निभाती है सबकी ख्याल रखकर
प्यारी बनते प्यार बांटते हैं वह
मानव आकर से बड़ा न बनता
अपनी व्यवहार से, गुणों से सिर्फ
दिल छोटे होने पर महान न बनते।
छोटे हुए तो भी फूल के जैसे
सुंदर और श्रेष्ठ होता है।
✍**सीतादेवी आर.उपाध्याय**
भद्रावती, शिमोगा, कर्नाटक

चुप है आदमी

हम रोज देखते हैं
अपनी आंखो के सामने
किसी निर्दोष को
सजा भोगते हुए
किसी गरीब को
भूख से
दम तोड़ते हुए।
आतंकवाद को हर क्षण
फैलते हुए
भ्रष्टाचार को हर पल
बढ़ते हुए।
जाति-धर्म के नाम पर
लोगों को कटते हुए
भाषा, क्षेत्र के नाम पर
लोगों को बटते हुए।
पर्यावरण को
बिगड़ते हुए
भारतीय संस्कृति को
गिरते हुए।
बच्चों का
व्यापार होते हुए
नारियों पर अत्याचार होते हुए।
ये सब न चाहते हुए भी
देखता है हर इंसान
पर आवाज उठाने की बजाय
चुप है
कौरवों की सभा में
द्रौपदी चीरहरण के समय
भीष्म पितामह के समान।
डॉ. संगीता बलवन्त, गाजीपुर,उ.प्र.

शीघ्र संदेश सम्प्रेषण रचनाए

कोलगेट से दांत साफ करने का.
पेप्सोडेंट से मजबूत करने का. बबूल से फ्रेश करने का. अगर फिर भी साफ ना होये तो-बिन्दास हार्पिक यूज करने का.....ओके.

++

विद्यार्थी आन्दोलन अगर एक अकेला टीचर सारे सब्जेक्ट नहीं पढ़ा सकता तो ऐसी उम्मीद क्यों करते है कि एक छात्र सारे सब्जेक्ट पढ़े?
जागो स्टूडेंट जागो. **जितेन्द्र सागर-८९५७१२४४९०**

++

एक फकीर ने आवाज लगाई. अल्ला के नाम पर खाना देदो. घर के अंदर से आवाज आई मम्मी घर पर नहीं है.
फकीर- मैंने खाना मांगा है मम्मी नहीं. **मो०८८६७४१७५०५**

बुद्ध धर्म के प्रवर्तक: भगवान बुद्ध

देवदत्त शर्मा 'दाधीच'
जयपुर, राजस्थान

ततः कलौ सम्प्रवृते सम्मोहाय सुरद्विषाम, बुद्धो नाभान्नाजन सुतः कीकटेषु भविष्यति।।

भागवतपुराण के अनुसार किसी देवता का मनुष्य आदि अथवा संसारी प्राणियों के रूप में शरीर धारण करना ही अवतार है. पुराणों के अनुसार विष्णु के चौबीस अतवार है. उनमें बुद्ध भी अवतार के रूप में हैं. आचार्य क्षेमेन्द्र ११वीं शती के परवर्ती जयदेव कवि के अनुसार भगवान विष्णु के दस अवतारों में बुद्ध की परिगणना की है. दशावतार स्रोत में 'केशव धृतबुद्धशरीर जय जगदीश हरे' आया है. कहा है कि बुद्ध रूप में अवतार लेकर कारुण्य जीव दया का विस्तार किया. भगवान बुद्ध ने सूर्य की तरह अपने ज्ञान के प्रकाश से सभी जीवों के अज्ञानान्धकार को दूर कर दिया है और दुख, दैन्य पाप आदि से मुक्त कर दिया है. आचार्य लक्ष्मणदेशि केन्द्र ने नगरवासी राक्षसों को जीतने के लिये चीपर धारण करने वालों बुद्धरुप धारी विष्णु को प्रणाम किया. 'पुरा पुराणामसुरान्! विजेतु सम्भावयन् चीवरचिन्हवेषम्, चकार यः शास्त्र ममोघ कल्पं ते मूलभूतं प्रणतोअस्मि बुद्धम' गोस्वामी तुलसी दास जी ने भी विनय पत्रिका में दशावतार की स्तुति में भी भगवान बुद्ध का वर्णन किया है-'प्रबल पाखण्ड महि-मंडलाकुल देखि, निधकृत अखिल मख कर्म-जालं, शुद्ध बौधकध ान, ज्ञान-गुणधान, अज बौद्ध अवतार बंदे कृपालं। १२वीं शती के वीर गाथा कालीन कवि चन्दबरदाई ने भी अपने प्रसिद्ध महाकाव्य 'पृथ्वीराज रासो' में भगवान बुद्ध को अवतारों की श्रेणी में माना है.' सुअ, दशरथ, हलद्दर, नम्भिय, बुद्ध कलंक नमो, दह नम्भिय'।

> **श्रीमद** भगवत के प्रथम स्कन्ध में तृतीय अध्याय में भगवान के अवतारों का विशद वर्णन हुआ है. जिसमें बुद्धावतार का भी उल्लेख है. इनको भगवान विष्णु के इक्कीसवें अवतार के रूप में पूज्यनीय किया है.

ज्योतिशास्त्र के प्रसिद्ध ग्रन्थ 'वृहत्पाराशर होरा शास्त्र' के द्वितीय अवतार क्रम-वर्णनाध्याय में विष्णु के दस अवतारों के साथ बुद्ध को बुद्धग्रह अवतार कहा है-'रामोअवतार सूर्यस्य चन्द्रस्य यदुनायकः नृसिंहों भूमिपुत्रस्य बुद्धः सोमसुतस्य च।।'

भगवान बुद्ध का जन्म महाराज शुद्धोदन के यहां हुआ था जो कीकट देश के राजा थे. इनका जन्म ५६३ ई. पू. शाक्य गणराज्य की राजधानी कपिलवस्तु में हुआ. माता महामाया का देहान्त इनके जन्म के ७ दिन बाद हो गया था बचपन का नाम सिद्धार्थ था. भगवान बुद्ध का विवाह १६ वर्ष की उम्र में कपिलवस्तु के पड़ोसी राज्य के महाराजा दण्डपाणि की पुत्री गोपा (यशोधरा) के साथ स्वयंवर में हुआ. इनके एक पुत्र भी हुआ. २९ वर्ष की आयु में सत्य की खोज में सन्यास लेकर कठोर तपस्या की, बौद्धगया में पीपल के वृक्ष के नीचे ज्ञान प्राप्त किया. सारनाथ में उन्होंने अपना पहला उपदेश दिया. जब सिद्धार्थ रात्रि में अपनी पत्नि व पुत्र राहुल को सोते हुए छोड़कर वन में चले गये तब प्रातः उठने पर सिद्धार्थ को नहीं पाया तो उनके मन में पलायन की टीस चुभ रही थी. उसने कहा जब क्षत्राणियां अपने पति व पुत्र को स्वयं सजधज कर आरती उतारकर टीका करके रण में भेजती है तो सिद्धि करने वले स्वामी को मैं सहर्ष प्रस्थान करती. यह मेरे लिए गौरव की बात होती. लेकिन चोरी छिपे जाने की बात मुझे टीसती रहेगी. अपने पुत्र को क्षत्रियोचित का पालन करती हुई शिक्षा-दीक्षा दी. उधर गौतम को बुद्धत्व की प्राप्ति हुई और वे घूमते हुए कपिलवस्तु पधारे-उधर राजमहल में यशोधरा अपने कक्ष में साधना कर रही. सिद्धार्थ आये यशोधरा ने स्वागत किया और कहा-'पधारो भव-भव के भगवान' उसके पास क्या था सोचा इतने बड़े सन्यासी को क्या भिक्षा देवे अन्त में क्षत्राणी का धर्म निभाकर अपने पुत्र को भिक्षा में समर्पित कर दिया. तुम भिक्षुक बनकर आये थे, गोपा क्या देती स्वामी? था अनुरुप एक राहुल ही, रहे सदा वह अनुगामी. यशोधरा के त्याग, तपस्या व चरित्र के बल पर ही गौतम महात्मा गौतम बुद्ध हो गये. बौद्ध धर्म में ईश्वर की शरण

को ही माना है, बुद्धं शरणं गच्छामि (मै बुद्ध की शरण जाता हूं) धम्मं शरणं गच्छामि (मैं धर्म की शरण) जाता हूं., संघम शरणं गच्छामि (मैं संघ की शरण जाता हूं) बौद्धधर्म में वंदना, परित्राण, संस्कार, व्रत, त्योहार एवं तीर्थो की बड़ी महिमा है. 'धम्मपद' बौद्ध धर्म का सबसे लोकप्रिय ग्रन्थ हैं. वर्तमान में बाबा साहेब अम्बेडकर ने बौद्ध धर्म पर पुस्तक लिखी, 'बुद्ध एण्ड हिज धम्म' भगवान बुद्ध का संदेश है कि 'अक्कोधेन जिने क्रोधं असाधु जिने, जिने कदरियं दानेन सच्चेन अलिक वादिनं' वैर का अन्त वैर से नहीं होता, अवैर या प्रेम से ही वैर का अन्त होता है. प्रतिशोध की भावना से कभी वैर शान्त नहीं होता. क्रोध को अक्रोध से, बुराई को भलाई से, कंजूसी को उदारता से और झूठ को सत्य से जीतना चाहिए.

'वाचानुरक्खी मनसा सुसंवुतो, कायेन नाकुंसलं कयिरा।
एते तयो कम्मपथे विसोपथे विसोधये, आराधये मग्गामिसिप्पवेदितं।।

वाणी को संयत रखे, मन को संयत रखे और शरीर से कोई अकुशल न करें. इन तीनों कर्मपंथों का विशोधन करें. ऋृषि बुद्ध के बताये अष्टागिक मार्ग का अनुसरण करें.

बौद्ध धर्म के मुख्य धर्म स्थल जहां पर जाने पर मनुष्य में ज्ञान, बुद्धि, विवेक, आचार और विचार आते हैं एवं सदा स्वस्थ, सुखी, स्नेही और श्रद्धावान बनता है-लुम्बिनी, बुद्धगया, सारनाथ, कुशीनगर, राजगृह, वैशाली, नालन्दा, कौशाम्बी, पावा(पावापुरी), सांकास्य, श्रावस्ती, कपिलवस्तु (नेपाल), उज्जैन, सांची, ललितपुर, कार्ला, भाजा, अजन्ता-एलोरा, नागार्जुनी, अमरावती, कांजीवरम्, नागपट्टम, जूनागढ़, सिद्धसर, तलजा. (बिहार, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, आन्ध्र प्रदेश, तमिलनाडु, गुजरात) आदि है. नालन्दा में बुद्ध की कई मूर्तिया थीं. चीनी यात्री हेनसांग ने वहां पर ८० फीट ताम्बे की ऊँची खड़े बुद्ध की मूर्ति देखी है. विदेशों में भी बुद्ध के कई मन्दिर है तथा वहां का धर्म भी बौद्ध है.

हम विश्व-मानव को संदेश देना चाहते है कि बुद्धि की क्रूरता का रास्ता छोड़कर बुद्ध की करुणा का रास्ता अपना लें. न बम विस्फोट करें, न करवाये, न उसके शिकार बनें. हम तो आतंकवादियों का भी मंगल चाहते हैं. भगवान उनको भी सद्‌बुद्धि और सूझ-बूझ के धनी बनाये ताकि वे भी अपने कर्मो को देदीप्यमान करें. भ्रष्टाचार में सहयोग नहीं करे, उसे नष्ट करने में सहयोग करें.

बुद्ध का करूणवाला स्वभाव अपने जीवन में लाने का संकल्प कर लो बस...हो गया भगवान बुद्धि का आदर, हो गयी उनकी बढ़िया पूजा. सबका मंगल, सबका हित, सबकी प्रसन्नता, सबकी सुरक्षा ऊँ शांति! ऊँ माधुर्य...

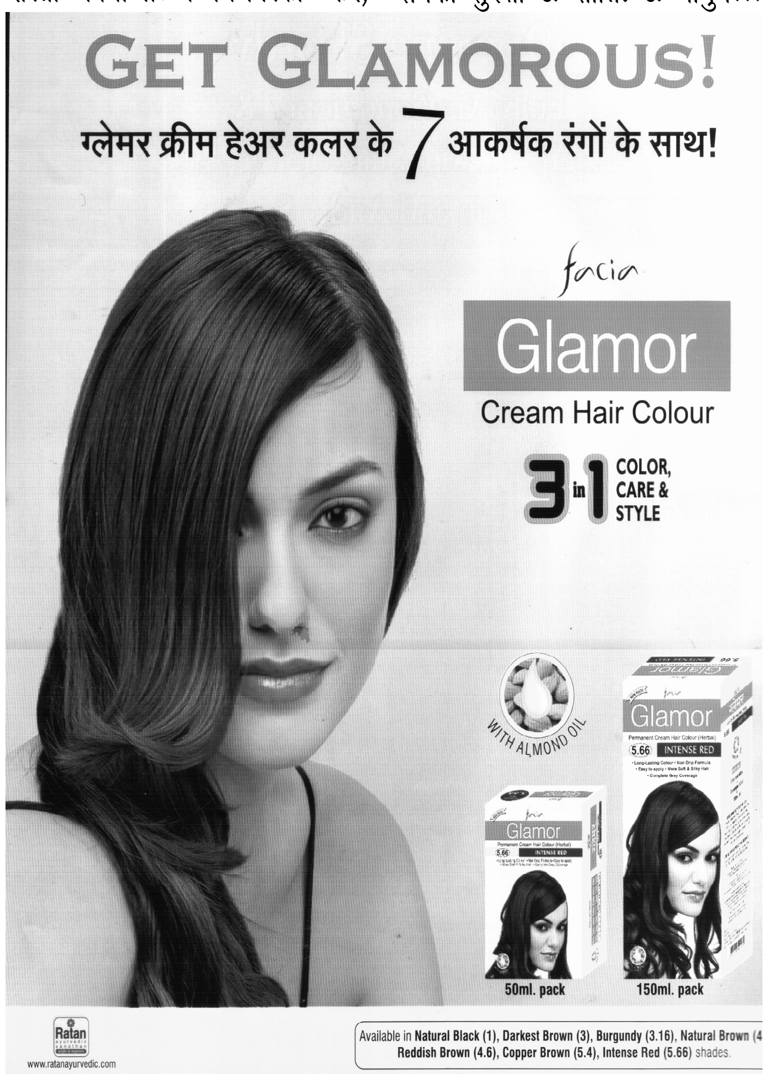

कहानी

सौदागर

✍डॉ0 इक़बाल अहमद मंसूरी शास्त्री

लेखक भाग्य दर्पण मासिक के संपादक हैं।

एक सौदागर व्यापार के लिए सामानों से भरा अपना जलयान लेकर दूसरे शहर को जा रहा था. रास्ते में उसका खर्च कम पड़ गया. एक शहर के करीब पहुँचने पर उसने अपना जलयान (जहाज) रोक दिया और लोह लंगड़ गिरा दिया. अपने पालतु वफादार कुत्ते को लेकर वह शहर गया और एक व्यापारी से मिला. उसने व्यापारी से अपना परिचय देते हुए कहा कि वह दूसरे शहर जा रहा है और उसका रास्ते का खर्च कम पड़ रहा है. अतः उसे ५०० रूपये की आवश्यकता है. वह वापस लौट कर उसका पैसा लौटा देगा. पैसे के एवज में वह अपना कुत्ता दे रहा है. व्यापारी ने सोचा कि यह भी व्यापारी है अतः इसकी मदद करनी चाहिए. उसने उसे ५०० रूपये देते हुए कहा कि कुत्ते की आवश्यकता नही है. अतः वह अपना कुत्ता ले जाये. तभी सौदागर ने कहा कि आप इस कुत्ते को रख लो क्योंकि कुत्ते के यहाँ रहने से हमे पैसों का ध्यान रहेगा और पैसा लौटाकर मै अपना कुत्ता ले जाउँगा. व्यापारी ने सौदागर की बात मान ली और कुत्ते को रख लिया।

एक रात व्यापारी के यहाँ चोरी हुई. चोर सारा सामान चुरा ले गये. कुत्ता सामान ले जाते समय चोरों के पीछे-पीछे गया भोर हो गया था. शहर के लोग जागने लगे थे. चोरों ने सोचा कि यदि किसी ने देख लिया तो वे सब पकड़े जायेंगे. अतः शहर के बाहर एक कुंए में चोरी का सारा सामान यह सोच कर डाल दिया कि दूसरी रात को वे पुनः सामान निकाल कर ले जायेंगे. यह सब देख कर कुत्ता वापस आ गया और दुकान के पास चुपचाप बैठ गया. सुबह जब व्यापारी दुकान पर पहुँचा तो देखा कि दुकान का सारा सामान गायब है और कुत्ता चुपचाप बैठा है. चोरी की खबर सुन कर वहाँ काफी लोग इकट्ठे हो गये और आपस में चर्चा करने लगे तभी कुत्ता सेठ के पास आया और उसका धोती पकड़ कर खींचने लगा तो सेठ ने लात मारते हुए उसे भगा दिया. धोती खींचने के बाद कुत्ता कुछ दूर गया और पुनः सेठ के पास आकर उसकी धोती खींचने के बाद कुछ दूर जाकर वापस चला आया. कुत्ते द्वारा बार-बार ऐसा करने पर एक व्यक्ति ने व्यापारी से कहा कि कुत्ता कुछ जानता है और इशारा कर रहा है. अतः इसके साथ चल कर देखना चाहिए. सेठ बोला कि यह कुत्ता नमक हराम है, जब चोरी हुई तो एक बार भी नहीं भौंका और अब भीड़ देखकर नाटक कर रहा है. तभी दूसरे आदमी ने कहा कि कुत्ता वफ़ादार जानवर होता है हो सके तो इसने चोरी होते देखा हो और उस समय न भौंका हो कि चोर उसे कहीं मार न दें. चलो देखा जाय कि यह कहाँ चल रहा है. कुत्ते के पीछे सब लोग चले गये. शहर से बाहर एक कुएँ के पास कुत्ता जाकर रूक गया और कुंए कि तरफ झाकने लगा. कुत्ते को ऐसा करते देख सेठ ने लोगों से कहा कि चलो यह कुत्ता सब को गुमराह कर रहा है, हमारा सारा सामान भी चला गया और अब यह हमें इस कुंए में गिराकर मार देना चाहता है. जब सब लोग वापस जाने लगे तभी कुत्ता कुंए में कूद गया. उसे कुंए में कुदता देख सब लोग कुंए के पास आ गये. कुत्ता कुंए से एक गिलास अपने मुंह में लिए निकलने की कोशिश कर रहा था.

कुत्ते के मुंह में गिलास देख सेठ ने कहा कि यह गिलास तो मेरा है जो चोरी हुआ था. लोगों ने कहा कि शायद चोरी गया सामान चोरों ने इसी

उत्तर प्रदेश में बिजली संयोजित भार की स्वगणना विधि

क्र.सं.	उपकरण	भार
१.	बल्व/पंखा	उपकरण पर वास्तविक भार अथवा ६० वाट
२.	ट्यूब लाईट	वास्तविक रेटिंग अथवा ४० वाट
३.	टेलीविजन	रंगीन-१००वाट, श्वेत श्याम-६०वाट
४.	लाईट प्लग	०३ प्लग तक ६० वाट तथा प्रत्येक ०३ अथवा कम के लिए ६० वाट
५.	पावर प्लग	०३ प्लग तक ५००वाट तथा प्रत्येक ०३ अथवा कम के लिए ५०० वाट
६.	फ्रिज	२५०वाट
७.	डेजर्ट कूलर	२५० वाट
८.	गीजर	१५०० वाट
९.	एयर कण्डीशनर १/१.५ टन	१५०० वाट/ २२०० वाट
१०.	वाटर लिफ्टिग पम्प	१८० वाट अथवा ३६० वाट, पम्प पर अंकित रेटिंग प्लेट के अनुसार

टिप्पणी- १.गीजर तथा एयर कण्डीशनर (बिना हीटर) दोनों लगे हैं, तब केवल गर्म करने अथवा ठंडा करने के इन उपकरणों में से मौसम के अनुसार एक भार गणना में लिया जाएगा (०२ अप्रैल से ३० सितम्बर तक एयर कंण्डीशनर तथा ०१ अक्टूबर से ३१ मार्च तक गर्म करने हेतु)

२. जो उपकरण लगाए जाने की प्रक्रिया में है तथा विद्युत सर्किट से जुड़ा नहीं है एवं स्टोर में, वेयर हाउस में अथवा शो-रूम में अतिरिक्त के रूप में बिक्री हेतु रखा है, उसे संयोजित भार में नहीं जोड़ा जाएगा.

३. उपरोक्त गणना के अनुसार घरेलू उपभोक्ता हेतु ५० प्रतिशत तथा वाणिज्यिक उपभोक्ता को ७५ प्रतिशत विद्युत भार स्वीकृत कराना आवश्यक है.

कुल विद्युत भार (बढ़े हुए भार को सम्मिलित करते हुए) ४ कि.वा. तक होने पर मीटर का मूल्य देय नहीं है. शेष अगले अंक में

विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद द्वारा जनहित में जारी

कुंए में छिपा रखा है. कुछ लोग कुंए में उतर कर कुत्ते को बाहर निकाले और कुंए की तलाशी ली तो चोरी गया सारा सामान उसी में था. यह देख सेठ कुत्ते से काफी खुश हुआ. उसने सौदागर के नाम एक पत्र लिखा कि तुम्हारे कुत्ते के कारण मेरा काफी सामान बच गया तथा मै कगांल होने से बच गया. अतः मै तुम्हे दिया गया ५०० रूपये माफ़ करते हुए कुत्ते को ससम्मान तुम्हारे पास भेज रहा हूँ. इस पत्र को सेठ ने कुत्ते के गले में बाँध दिया और कुत्ते को अपने मालिक के पास जाने को कहा. इधर कुत्ता सौदागर के पास जाने लगा और उधर सौदागर भी वापस आ गया. सौदागर फिर उसी जगह अपना जलयान रोक कर यह सोचते हुए शहर की ओर चला कि अधिक समय हो गया पता नही मेरा कुत्ता कैसे होगा और सेठ क्या सोच रहा होगा. सेठ कही ऐसा न सोच रहा हो कि सौदागर धोखेबाज निकला कुत्ता देकर पैसे ले गया और वापस नही आया. कुत्ता सेठ से नाराज होकर कही भाग न गया हो. इतने में सौदागर की नज़र कुत्ते पर पड़ी और कुत्ता भी अपने मालिक को देख लिया. सौदागर को देख कुत्ता बड़ा खुश था. उधर कुत्ते को आता देख सौदागर ने सोचा कि शायद कुत्ते ने कोई गलती कर दी है जिससे नाराज होकर सेठ ने इसे डाटा होगा और यह भाग आया है. अब सेठ हमे गाली दे रहा होगा कि सौदागर धोखेबाज है पैसा ले गया वापस भी नही किया और जो कुत्ता गिरवी रखा था वह भी भाग गया. यह सोच कर सौदागर आग बबूला हो रहा था कि इस कुत्ते ने आज हमारी शाख गिरा दी. दूर से ही सौदागर ने म्यान से तलवार निकाल ली कि आज इस कुत्ते को नही छोड़ेंगे. इतने में कुत्ता सौदागर के पास पहुँच कर ज्योंहि उसका पैर चाटने लगा त्योंहि सौदागर ने तलवार उसकी गर्दन पर चला दी। गर्दन कटने के बाद गर्दन में बंधा सेठ का पत्र दूर जाकर गिरा. पत्र को उठा कर जब सौदागर ने पढ़ा तो उसे अपनी गलती का एहसास हुआ कि बिना सोचे समझे हमने अपने वफ़ादार कुत्ते को मौत के घाट उतार दिया. सौदागर ने भी वहीं कुत्ते के शोक में हाय कुत्ता-हाय कुत्ता करते हुए अपना प्राण त्याग दिया.

सम्मानार्थ प्रविष्टिया आमंत्रित है

साहित्य जगत में लोकप्रिय, विश्वसनीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर चर्चित विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान द्वारा २००३ से लगातार साहित्यिकारों/पत्रकारों/समाजसेवियों/कलाकारों को सम्मानित करता आ रहा है. इस वर्ष निम्न सम्मान प्रस्तावित है-

कैलाश गौतम सम्मान-(हास्य/व्यंग्य रचना पर)-किसी भी विधा की एक रचना तीन प्रतियों में, **डॉ.किशोरी लाल सम्मान**-(श्रृंगार रस की रचना) अप्रकाशित एक रचना तीन प्रतियों में, **प्रवासी भारतीय सम्मान**-ऐसे प्रवासी भारतीय जो हिंदी की किसी भी विधा में लिख रहे हो. एक रचना तीन प्रतियां, **हिंदी सेवी सम्मान**-(विदेशी/अहिन्दी भाषी नागरिक)- किसी भी विधा की एक रचना तीन प्रतियों में, **राजभाषा सम्मान**-सरकारी/अर्द्धसरकारी विभागों/उपक्रमों में कार्यरत राजभाषा अधिकारियों द्वारा हिन्दी के विकास के लिए. विस्तृत विवरण तीन प्रतियों में, **राष्ट्रभाषा सम्मान**-अहिन्दी भाषी क्षेत्र में हिंदी के उत्थान के लिए, प्रमाणिक विवरण तीन प्रतियो में, **युवा कहॉनीकार/युवा व्यंग्यकार/युवा कवि सम्मान**- (उम्र ३५ वर्ष से कम)-सम्बन्धित विधा की एक रचना तीन प्रतियों में, **कला/संस्कृति सम्मान**-किसी भी कला (संगीत, नाटक, कला, पेंटिग, नृत्य आदि) के क्षेत्र में उत्कृष्ठ योगदान के लिए, विस्तृत विवरण तीन प्रतियो में, **बाल साहित्यकार सम्मान**-(उम्र २१ वर्ष)-किसी भी विधा की एक रचना तीन प्रतियो में, **राष्ट्रीय प्रतिभा सम्मान**-हिन्दी सेवा के साथ-साथ किसी भी क्षेत्र में विशेष योगदान के लिए, प्रमाणिक विवरण तीन प्रतियों में. **राष्ट्रीय युवा प्रतिभा सम्मान**-(उम्र ३५ वर्ष से कम)-किसी भी क्षेत्र में विशेष योगदान के लिए, **पुलिस हिंदी सेवा सम्मान**- पुलिस सेवा में रहते हुए हिन्दी को बढ़ावा देने वाले, सम्पूर्ण विवरण एक अप्रकाशित रचना तीन प्रतियो में, **सांस्कृतिक विरासत सम्मान**-ऐसे व्यक्ति/संस्थाएं जो देश के किसी भी क्षेत्र में स्थानीय संस्कृति को बढ़ावा देने में अपना अमूल्य योगदान दे रहे हैं, सम्पूर्ण विवरण तीन प्रतियों में, **विधि श्री**-विधि प्रक्रिया में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने वालों को प्रामाणिक विवरण तीन प्रतियों में, **डॉक्टरश्री**-डॉक्टरी पेशे में रहते हुए हिंदी की सेवा के लिए, प्रमाणिक विवरण तीन प्रतियों में, **शिक्षक श्री**-शिक्षा के क्षेत्र में रहते हुए हिन्दी को बढ़ावा देने के लिए, प्रमाणिक विवरण तीन प्रतियों में, **सैनिक श्री**-सैन्य सेवा में कार्य करते हुए हिंदी की सेवा प्रमाणिक विवरण तीन प्रतियों में, **विज्ञान श्रीः** विज्ञान वेत्ता जो विज्ञान को हिंदी में बढ़ावा दे रहे है, प्रमाणिक विवरण तीन प्रतियों में, **प्रशासक श्री**-ऐसे प्रशासक जो किसी भी प्रकार से हिंदी को बढ़ावा दे रहे हो, प्रमाणिक विवरण तीन प्रतियों में, **विहिसा अलंकरण**-हिन्दी की किसी भी विधा में प्रकाशित/अप्रकाशित १०० पृष्ठों की एक किताब के लिए,

उपाधियां उपाधियां प्रकाशित/अप्रकाशित कम से कम १०० पृष्ठीय कृति पर ही प्रदान की जायेगी. **साहित्य के क्षेत्र में**ः साहित्य भूषण, साहित्य शिरोमणि, साहित्य सम्राट, कहानी सम्राट, कहानी रत्न, काव्य रत्न, काव्य श्री, काव्य शिरोमणि, दोहा श्री, ग़ज़ल श्री

विशेषः१. प्रविष्ट्रि के साथ एक पोस्ट कार्ड, एक टिकट लगा जबाबी लिफाफा, सचित्र स्वविवरणीका और २०० रुपये मात्र का धनादेश/बैंक ड्राफ्ट/मल्टी सिटी चेक अथवा **युनियन बैंक ऑफ इंडिया** की किसी भी शाखा से **'सचिव विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद'** के नाम से **खाता संख्याः 538702010009259** में जमा कर, जमा पर्ची की छाया प्रति आवेदन के साथ संलग्न कर भेजना अनिवार्य होगा.

२. सम्मान में प्रतिभागी सभी साहित्यकारों को राष्ट्रीय हिन्दी मासिक 'विश्व स्नेह समाज' की वार्षिक सदस्यता निःशुल्क प्रदान की जायेगी. जो जनवरी २०१३ से लागू होगी.

३. प्राप्त पुस्तके/रचनाएं किसी भी दशा में लौटाई नहीं जाएगी. रचनाओं के साथ मौलिकता को दर्शाना अनिवार्य होगा. प्रत्येक

पृष्ठ पर अपने हस्ताक्षर अवश्य करें. संस्थान को प्राप्त रचनाओं को प्रकाशित करने का अधिकार होगा.

४. सम्मान किसी भी परिस्थिति में डाक से प्रेषित नहीं किया जाएगा.

५. अपूर्ण प्रविष्ट्रियों पर विचार नहीं किया जाएगा. न ही इस संदर्भ में कोई पत्र-व्यवहार किया जाएगा.

६. प्रत्येक सम्मान के लिए एक विद्वजन का ही चयन किया जाएगा जो सर्वोच्च होगा. पुरस्कारों हेतु चयन एक निर्णायक मण्डल द्वारा किया जायेगा जो अंतिम व सर्वमान्य होगा. इसमें किसी भी प्रकार की शिकायत स्वीकार्य नहीं होगी. विवाद के संदर्भ में न्यायिक क्षेत्र इलाहाबाद होगा.

७. सम्मान समारोह इलाहाबाद में आयोजित किया जाएगा. चयनित सभी विद्वजनों को डाक से/दूरभाष/ई-मेल के माध्यम से सूचना दी जाएगी.

अंतिम तिथिः ३० अक्टूबर २०१२

अन्य किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए सम्पर्क करेंः-

सचिव, **विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान,**
एल.आई.जी-६३, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद-२११०११, उ.प्र.
मो०: ०९३३५१५५९४६, ईमेल-sahityaseva@rediffmail.com

सम्मान हेतु आवेदन पत्र

सेवा में

सचिव
विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान
इलाहाबाद

विषयः ....सम्मान/उपाधि हेतू प्रविष्टि
संदर्भः
महोदय,

विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान द्वारा प्रदान किए जाने वाले..
सम्मान/उपाधि हेतु मैं अपना आवदेन प्रस्तुत कर रहा हूं। मेरा विवरण निम्नवत हैः-
नाम : ....
पिता/पति का नामः..
पताः..
....
दू०/मो०संख्या..........................ईमेल-...........................
रचना/पुस्तक/पाण्डुलिपि का शीर्षकः...
विधा...................वर्ष.........................प्रेषित प्रतियां.............
धनादेश/बैंक ड्राफ्ट/डीडी/चेक का विवरण, राशि.....................बैंक का नाम..........................संख्या.......................
....

मैं शपथ पूर्वक यह प्रमाणित करता/करती हूं कि ०१ प्रेषित रचना/पुस्तक/पाण्डुलिपि मेरी मौलिक है. इसमें किसी भी प्रकार का विवाद होने पर मैं स्वयं जिम्मेदार होऊंगा. ०२ मैंने संस्थान के पुरस्कार/सम्मान संबंधी नियम पढ़ लिए हैं और मैं उन्हें मान्य करता/ करती हूं

भवदीय
हस्ताक्षर....................................
पूरा नाम....................................

प्रस्तावक
नाम..............................
पूरा पता.......................
हस्ताक्षर..........................

सलंग्नक
०१ सचित्र जीवन परिचय-एक प्रति ०२ टिकट लगा लिफाफा/पोस्टकार्ड-एक ०३ धनादेश/बैक जमा पर्ची छाया प्रति-एक
०४ सम्बन्धित रचना/पुस्तक/पाण्डुलिपि- तीन प्रतियों में

चिट्ठी-पत्री

कितना चारो ओर है अपसंस्कृति का राज,
आओ मिलकर रचे हम विश्व स्नेह समाज।
प्रो० विश्वम्भर शुक्ल, लखनऊ

+++++++++++++++++++++++++

श्रीमान संपादक महोदय,
आपकी पत्रिका मैंने अपने मित्र के माध्यम से पढ़ी. जिसमें हृदय को उत्साहित करने वाली एवं समाज की एक प्रमुख समस्या पर डॉ० गार्गी शरण मिश्र 'मराल' जी का लेख बहुत ही प्रशंसनीय है एवं संतोष शर्मा 'शान' की कहानी भी बहुत प्रेरणादायक थी.
स्नेह लता पुत्री श्री रामचन्द्र नाथ
ग्राम-लखीमपुर, समोदिया, रामपुर, उ.प्र.

+++++++++++++++++++++++++

काम-काज से यूं घिरे, हुये स्वयं से दूर
अब तो अपने आप से, बात करें भरपूर
नूतन वर्ष की मंगलमय शुभकामनाएं
रवीन्द्र रवि, कटनी, म.प्र.

+++++++++++++++++++++++++

मांग ले बंदे जो चाहे तू, जाने वाला देता है।
वर्ष पुराना द्वार से तेरे, आज विदायी लेता है।।
दिसम्बर तुझसे मांग रहे है, देना मुझको यह उपहार।
नए वर्ष में दूर हो सके, भारत में फैला भ्रष्टाचार।।
जाते-जाते तुम्हें यह दुआ दिये जा रहा हूं।
तुम्हारे देश के अंधेरे मैं लिये जा रहा हूं।।
अमृत का प्याला सौप के उसको।
विष का प्याला मैं पिये जा रहा हूं।।
रामकुमार वर्मा, सरगुजा, छ.ग.

+++++++++++++++++++++++++

अखिल' नशा मत कीजिए, नशा नाश का मूल।
घर वैभव, परिवार सब, होता नष्ट समूल।।
नशा मूल अपराध का, और नरक का द्वार।
'अखिल' बचो इससे सदा, होगा बेड़ा पार।।
पान मसाला दे रहा, कैसर की सौगात।
आज युवक नित खा रहे, बहुत बुरी यह बात।।
मदिरा पीकर झूमते, ऐसा आया जोश।
औधें मुंह नाली गिरे, हुए वहां बेहोश।।
कुत्ता मुंह को चाटकर, करता है सम्मान।
पूंछ हिलाकर कह रहा, धन्य-धन्य इन्सान।।
अखिलेश निगम 'अखिल',
अपर पुलिस अधीक्षक, लखनऊ

जीवन चक्र के इतिहास गाथा पर
अपनी कुछ शीकन कुछ मुस्कान
कुछ टीस, कुछ थकान, अंकित कर गया
और एक साल बीत गया
कुछ सुखद सपने, कुछ दुःखद घटनाएं
छुए-अनछुए पलों की यादें छोड़ गया
और एक साल बीत गया
वर्ष प्रति वर्ष के बदलते
निरन्तर क्रमबद्ध समय के साथ ही
यह वर्ष भी कुछ दे गया, कुछ ले गया
किसी से जोड़ गया तो किसी से तोड़ गया
और अन्य सालों की तरह यह भी
अपना मुंह मोड़ गया
और एक साल बीत गया।
राजेश कुमार मानस 'श्याम', बिलासपुर, छ.ग.

+++++++++++++++++++++++++

आदरणीय भाई गोकुलेश्वर द्विवेदी जी
विश्व स्नेह समाज का अंक मिला, धन्यवाद. पत्रिका मुझे प्रथम बार प्राप्त हुई है. साधारण कलेवर और कागज में सामग्री मूल्यवान और पठनीय प्रकाशित की है आपने. 'अपनी बात' में ही यथार्थ झलकता है. अन्य आलेख अच्छे हैं. 'चीन की मानसिकता', आलेख देश को सचेत करने वाला है. भाई गोकुलानन्द शर्मा के व्यक्तित्व व कृतित्व की अच्छी जानकारी मिली. विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान के माध यम से आप हमारी मातृभाषा हिन्दी के लिए आप बहुत महत्वपूर्ण कार्य कर रहे है.
प्रिय भाई गोकुलेश्वर, साधुवाद ले आज।
शुचि साहित्यिक पत्रिका, विश्व स्नेह समाज।
डॉ० सुरेश प्रकाश शुक्ल, सम्पादक,
प्राची प्रतिभा हिन्दी मासिक, सरस्वती, ६३, पवनपुरी, लेन-६, आलमबाग, लखनऊ, उ. प्र.

+++++++++++++++++++++++++

गोकेलेश्वर भाई, आप बढ़िया काम कर रहे है २०१२ साहित्य मेला की बधाई
शैलेष गौतम-६४१५३२४२२८

चलो जरा मुस्करा लो?

दो मित्र एसएसएलसी में दो बार फेल हुए. एक ने कहा-आओ मित्र अब जिंदा न रहना, आत्म हत्या कर लेंगें.
दूसरा मित्र-पागल हो गये क्या? अगले जन्म में एलकेजी से पढ़ना पड़ेगा सोचो.

++

सरदार जी ने मिठाई की दुकान प्रारंभ की. एक सहायक की आवश्यकता थी. इसलिए विज्ञापन में लिखवाया 'मधुमेह रोगियों को वरीयता दी जाएगी.' (क्योंकि मधुमेह रोगी मिठाई नहीं खायेगा.) **जे.वी.नागरत्नमा,** शिमोगा, कर्नाटक

++

सारे सपने अपने हो, फुल बरसे, कांटे ना हो चांद सूरज सा चमकते रहे सदा, आपका जीवन रोशन ही रोशन हो. नया साल मुबारक हो.

+++++++++++++++++++++++++++++++++++++++

एक बार भीगीं आंखों ने दिल से शिकवा की 'आंसूओं का बोझ केवल हम क्यों उठाएं?
दिल ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया.
'सपने किसने देखे थे.'

+++++++++++++++++++++++++++++++++++++

आप तो चांद हो जिसे सब लोग याद करते हैं. हमारी किस्मत तो टुटते हुए तारे के जैसी है. याद करना तो दूर लोग अपनी ख्वाईश के लिये हमारे टुटने की फरियाद करते हैं. **मो०८८६७४१७५०५**

अहिन्दी भाषी साहित्यकार

मेहनताना

जरा मशाल जलाओ वतन में बढ़ रहा अंधेरा है।
भ्रष्टाचार रिश्वत का यहां लग रहा बसेरा है।।
इन्सांनियत हो गई है गुम, हिंसा, बलात्कार है मंजर।
महंगाई आम आदमी के सीने पर चला रही खंजर।।
संस्कृति अंधेरे में सो गई है, पश्चिम की नकल में खो गई है।
उठो भारतीय आदर्श का अलख जगाओ।
पश्चिम का बढ़ रहा घेरा है।।
+++++++++++++++++
परिधान भी बदल गये, खान पान भी बदल गये।
व्यवहार में अंग्रेजी, संवाद में अंग्रेजी।।
अंग्रेजी की शिक्षा में, हम इतने घुल मिल गये।
भारतीयता की पहचान का, अब क्या रहा है बाकी।।?
यहां तो अल गिरगिट सा, बदल गया चेहरा है।।
+++++++++++++
मिलावट है हर जगह, नकली का बोल बाला।
झूठ, बेईमानी का है, सब तरफ हवाला।
ईमानदार को ढूढना, अब हो गया है मुश्किल।
दूसरों की रोटी छीनकर, वो घी से करे निवाला।।
संवेदना तो किसी में भी, अब नहीं रह गई है।
गरीबों को लूटकर, वो बना रहे शिवाला।।
जगाओ नैतिकता के सूख की रोशनी को।
अमावस सा बढ़ रहा अंधेरा है।।
जरा क्रान्ति की आवाज को बुलन्द करो,
तभी आयेगा फिर नया सवेरा है।।

डॉ० हीरा लाल जायसवाल
नागपुर विश्वविद्यालय, गोन्दिया, महाराष्ट्र

समस्या, तेरा नहीं अंत?

इस वर्ष की ताजा ख़बर
सब के सब है बेख़बर
संसद में पेश हो गया बजट
सड़क पर विकास दौड़ेगा सरपट।।
लगता, वर्ष है चुनाव का
जनता के मोल-भाव का
होंगी घोषणाएं जोरदार
चुनाव बाद मचेगी हाहाकार।।

कहते है किसान हुआ मालामाल
सुना है नैनों में नेनो करेगा धमाल
सब की चांदी, सब है मालामाल
एक तू ही है गरीब, रहता कंगाल।।
चारा ओर खुशहाली है
पानी की थोड़ी तंगहाली है
चारो ओर मलमास है
मौत का मधुमास है।।

जंगल मे मंगल मना रहा वसंत
करोड़ो का मालिक है नंगा संत
हर वष बजट की होती बल्ले बल्ले
एक तू ही है समस्या, तेरा नहीं अंत?

बालाराम परमार हंसमुख
गोन्दिया, महाराष्ट्र

'दि मॉरल' के सम्पादक को 'सम्पादक शिरोमणि' सम्मान

कानपुर. देश की ख्यातिलब्ध साहित्यसेवी संस्था 'साहित्य मण्डल श्रीनाथद्वारा' के द्वारा आयोजित 'पाटोत्सव ब्रजभाषा समारोह' के अवसर पर महानगर के वरिष्ठ पत्रकार शिवशरण त्रिपाठी, सम्पादक 'दि मॉरल'(हिन्दी/अंग्रेजी) को उनके उत्कृष्ट संपादन हेतु 'सम्पादक शिरोमणि' की उपाधि से संस्था अध्यक्ष श्री भगवतीप्रसाद देवपुरा ने उत्तरीय, शाल, श्रीफल एवं भगवान श्रीनाथ जी की प्रतिमा प्रदान कर सम्मानित किया है.

विदित हो कि श्री त्रिपाठी को उनके उत्कृष्ट सम्पादन के लिए अब तक देश की प्रतिष्ठित साहित्यिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक संस्थायें/ संस्थान विभिन्न मानद उपाधियों से सम्मानित कर चुके हैं। महानगर के पं. बद्रीनारायण तिवारी, डॉ. विजय प्रकाश त्रिपाठी, डॉ. सम्पूर्णानन्द पाण्डेय, दुर्गाचरण मिश्र, अनाम पाण्डेय, रामबाबू गुप्त आदि साहित्यकारों एवं पत्रकारों ने उन्हें बधाई दी है.

प्यारी मां

कौन है वो जिसकी दी धड़कन धड़के मेरे दिल में
कौन है वो जिसकी परछाई दिखती हर मंजिल में
जिसने हमको प्राण दिया है अपना लहू पिलाकर
जो रातों में कभी न थकती हमको सुला सुलाकर
अपना प्यार और अपनी दुनियां हमें ही उसने दे दी
बदले में हमको क्या करना सोचें आओ हम भी
उसका दिया ही ज्ञान हमें अभी भी राह दिखाता है
जब भी कोई संकट आए याद उसी का आता है
उसकी बातें कभी ना भूली ना हीं भूले उसका दुलार
प्यार की बातें जब भी सुनते आता याद उसी का प्यार
मुझको जब कोई होता संशय फोन पर बातें होती हैं
खुशी की बात पर खुश होती है गम की बात पर रोती है
बच्चों से जब बातें करती उन्हीं की बातों को सुनकर
कहती मुझसे याद आ रही आ जाओ बच्चों कसे लेकर
सुनकर उसका यह आदेश मैं तनिक नहीं रूक पाता हूं
उसके दिल को ठेस न पहुंचे यहीं सोच घबराता हूं
कौन है जिसकी ये बातें वो धरती है या आसमां
और नहीं कोई वह यारों वह है मेरी प्यारी मां।

✍ **अरविन्द कुमार तिवारी,** सहायक प्रबंधक(राजभाषा), ना० वि० प्र० का०, बमरौली, इलाहाबाद, उ.प्र.

क्या कहा था आपने

जीवन शान्ति की निर्झरणी बन गया
उदासी के पल नही दिख रहें
केवल शान्ति का बहाव चारो ओर
आइये हम सभी शान्ति के किनारों में चलते रहें
जीवन चलने का नाम
बहाव के साथ चलते रहें
भोर के उगते सूरज को देखें
शाम के धुधलके में डूबते सूरज को देखें
संसार का शोर कलरव,
अब मुझे सुनाई ही नहीं देता
गुरुदेव क्या कहा था आपने
आज घर के बाहर कौन जायेगा?
(रवीन्द्र नाथ टैगोर का स्मरण)

✍ **प्रदीप गौतम 'सुमन'**
रीवा, म.प्र.

हदें

मां बाप ने अपने पांचों लड़को को बुलाया,
खाने पीने की समस्या से, अवगत कराया।
मां बोली तुम्हारे बाबू जी की, ऐनक कई साल से खराब है,
रोटी और चाय का समय से, मिलना भी बदहाल है।।
ये पुराना टेबल फैन, कभी कभी चल पाता है,
जब चलता है, शोर से नींद उड़ा जाता है।
एक इनवरटर का पोइन्ट दे दो,
बिन बिजली सांस उखड़ जाता है।।
पांचों बेटे एक दूसरे का मुंह देखने लगे।
दोनों बड़े लड़के आंख मिचकाने लगे
तीसरा बोला मुझ पर बच्चों का खर्च ज्यादा है, पोतों के होते हुए,
इनवरटर का पोईन्ट लेने वाला ये कैसा दादा है।।
चौथे ने भी उसकी तान में तान मिलाई,
पांचवे ने झिड़की देकर आंख दिखाई।
उन सब की बहुएं दूर से सब देख रही थीं,
और जब ब्याह कर आई, उस समय को कोस रही थीं।।
हमारा कैसा मुकद्दर है, ये मरते भी नहीं हैं
लड़के बोले और कहीं जाते भी नहीं हैं।
मां बाप सोच रहे थे, आंखों से आंसू पोछ रहे थे,
कल तक हमारी उंगली पकड़कर
डगमगाते कदमों ने धरती नापने की,
कोशिश करते ये लड़के
आज हमारी हदें तय कर रहे हैं।

✍ **रामआसरे गोयल,** गाजियाबाद, उ.प्र.

मनुष्य

अपने 'धर्म' को निभाता है जो भली-भांति,
वही वस्तुतः है 'मनुष्य' कहलाने का अधिकारी।
मनुष्य का लक्षण है-निरन्तर चिन्तनशील होना,
मननशीलता से ही है नर, 'मनुष्य' कहलाने का अधिकारी।।

जीवन की सार्थकता

जीवन में महत्वाकांक्षी होता है जो,
तथा तदर्थ प्रयत्नशील भी रहता है।
रचनात्मक कर्म में निरत रहता है जो,
जीवन सार्थक भी उसी का होता है।।

सफलता का रहस्य

परिस्थितियों से संघर्ष करने में ही,
खिलता है व्यक्तित्व का कमल।
'संघर्ष' है जीवन में 'सफलता का रहस्य'
इस बात पर करना है हमें सदैव अमल।

✍ **डॉ० महेश चन्द्र शर्मा,** साहिबाबाद,गाजियाबाद, उ.प्र.

हमारे गांव में

हमारे गांव में दलबल नहीं था।
हमारे समय में छलबल नहीं था।।
कोयलें विद्वेष की बहुत अब तो।
घृणा के बीज का जंगल नहीं था।।
हर एक व्यक्ति में दहशत भरी है।
यहां आतंक का दंगल नहीं था।।
गांव अब दिख रहे उजड़े हुये सब।
घुटन माहौल का हर पल नहीं था।।
हर जगह बाग अब दिखते नहीं है।
परिन्दा तब कहीं घायल नहीं था।।
नदी कोई न निर्मल दिख रही अब।
कभी भी इतना दूषित जल नहीं था।।
न दिखते हैं कमल अब पोखरों में।
घोर दुर्गन्धमय तब मल नहीं था।।
आजकल मतलबी दिखते हैं 'सुरेश'।
गांव तब स्वार्थी पागल नहीं था।।

✍ **डॉ० सुरेश प्रकाश शुक्ल,** सम्पादक-प्राची प्रतिभा मा०, लखनऊ,

नहीं रही वो आग

तू राही है पंथी है जिस राह का
तू चलेगा नहीं पथ करेगा नहीं।
ये अवरुद्ध आया है जो बीच में
तू हटायेगा तो भी हटेगा नहीं।।
तूने संकल्प ले ही लिया है अगर
फिर चलने में देखने क्या टेढ़ी डगर
कैसी प्रतीक्षा कोई सम्बल मिले
और चल ही पड़े तो क्या न नुकर
ये जीवन तो सबके लिये बन ही है
तू बांटेगा नहीं ये छटेगा नहीं।
तू चलेगा.......
कोई पैदा हुआ औ कुछ भी न जिया
चंद सांसे भरी औ' स्वयं चल दिया
असहाय था बेचारा नव-पल्लव था
सबने मिल करके उसको बहुत बल दिया
तू समझ ले कि संताप क्या चीज है
ये आता है, आने से हटेगा नहीं।
तू चलेगा.....................

✍ **हरिचरण वारिज,** भोपाल, म.प्र

नहीं रही वो आग

बहुत पुरानी नहीं
मेरे बचपन की ही बात है
जब गांव में दो-चार पैसे की माचिस रखना
सबके बस की बात नहीं थी
तब कुशल गृहणियां दिन में चूल्हे की राख में
दबा कर रख देती थी एक सुलगता कण्डा
और गोधुली में उसी से जलाती थी
चूल्हें में आग
और चढ़ा देती थी चूल्हे पर अदहन
फिर होता था घर-दालान में दिया-बाती
जिन औरतों के चूल्हें मे दबा कण्डा
बुझ जाता था किसी कारण
वो देखती रहती थी पड़ोसी घरो को
जहां से धुआं उठता दिख जाता
पहुंच जाती थी वहां आग मांगने
इस तरह से एक घर की आग
पहुंच जाती थी कई घरो तक
टिम टिमा पड़ते थे दिये
सुलग पड़ते थे सील लगे कण्डे
भद भदा जाता था चावल
खदबदा जाता था साग
कुप्पा हो जाती थी रोटियां।
जल्दी ही घर लौट आते थे
चौपाल से दादा जी के समव्यस्क
खेत से पिता जी के समव्यस्क
चारा गांहो से मेरे हम उम्र लड़के
जल्दी ही सब खा लेते थे खाना
हां दुधारु गाय और झबरा कुत्ते
का भी लगता था हिस्सा।
फिर बुझा देते थे
एक को छोड़कर बाकी दिये
ताकि बच सके तेल
फिर पढ़ने बैठ जाते थे
दिया/लालटेन के किनारे
तेहेरे-चचेरे-मुमेरे-फुफेरे भाई
और कुछ घरो में बहन-बेटियां भी
तथा अमीर पड़ोसियों के घर
गरीब पड़ोसियों के बच्चे।
इस तरह वो आग जलाये रखती थी
सारे गांव में प्रेम की लौ
अब हर घर में माचिस है
एक घर में कई-कई माचिस है
परन्तु कहीं नहीं रही वो आग
बिखर गया है सब कुछ
माचिस की तीलियों की तरह।

✍ **अनुराग मिश्र,** बिजनौर, उ.प्र.

शीघ्र संदेश सम्प्रेषण रचनाएं

मतलब की इस दुनिया में होती सब बातें मतलब की.
मतलब से दिन निकला करते, होती रातें मतलब की.
बिन मतलब पूछे ना कोई किसी को, सुख की सब सौंगातें मतलब की. मतलब के इरादे-वादे-रिश्ते, सब जजबातें मतलब की. मतलब के सब नियम कायदे, फरियादें-यादें मतलब की. उठती है मुक्ती की मैयत सजती हैं बारातें मतलब की. नाव अकेली है सागर में, सब झंझवाते मतलब की. मतलब के सब खेल खिलौने, तमाशे-मुस्काने मतलब की. बिन मतलब है परमारथ की मंजिल दावत नहीं हिस्से में जिसके. सीमाएं, मर्यादाएं और बंधनों की हर सांसे मतलब की.

++

जिन्दगी के ३ अजीब लेवल......
१-कॉलेज लाईफ टाईम, दोस्त है पर पैसा नहीं
२-आफिस लाईफ, दोस्त है, पैसा है पर समय नहीं है
३.ओल्ड लाईफ टाइम- पैसा है, पर वो दोस्त नहीं! **मो०९८९७५१३८३७**

स्वर्ग विभा तारा राष्ट्रीय सम्मान २०१२ हेतु प्रविष्ट्रियां आमंत्रित है

स्वर्ग विभा टीम सभी साहित्यकार/पत्रकार बन्धुओं से निःशुल्क प्रविष्ट्रि की अपील की गयी है. निर्णायक समिति द्वारा चयनित पांच प्रतिभागियों को एक भव्य समारोह में 'स्वर्ग विभा तारा राष्ट्रीय सम्मान-२०१२ के परिपेक्ष में शाल, प्रशस्ति पत्र, एवं २१००/-रुपये नगद राशि से सम्मानित करेगी. अपनी प्रविष्ट्रिया (श्रेष्ठ प्रकाशित पुस्तक की एक प्रति, परिचय पत्र एवं छाया-चित्र के साथ) ३१ अक्टूबर २०१२ तक अध्यक्ष, स्वर्ग विभा, १५०२, सी क्वीन हेरिटेज, पाम बीच रोड, प्लाट-६, सेक्टर-१८, सानपाड़ा, नवी मुम्बई-४००७०५, मो० ०९३२२९९११९८ पर भेजें.

डॉ० जायस्वाल को साहित्यलोक पर प्रथम पुरस्कार

गोदिया के साहित्यकार डॉ० हीरालाल जायसवाल को उनकी शोध निबंधों की पुस्तक साहित्यलोक पर महाराष्ट्र राज्य हिन्दी साहित्य एकेडेमी मुंबई की ओर से आचार्य नंद दुलारे बाजपेयी प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया. इसमें पैतीस हजार रुपये का चेक, शाल, श्रीफल, स्मृति चिन्ह प्रदान किया गया. यह सम्मान सांस्कृतिक मंत्री संजय देवतले एवं राज्य मंत्री श्रीमती फौजिया खान द्वारा प्रदान किया गया.

सुरेखा शर्मा बेंगलौर में सम्मानित

कर्नाटक महिला हिन्दी प्रचार समिति, बेंगलौर द्वारा ३८वें दीक्षात समारोह में श्रीमती सुरखा शर्मा को 'हिन्दी प्रचार एवं साहित्यकार के रूप में सम्मानित किया गया. समारोह के मुख्य अतिथि प्रो० सूर्य प्रसाद दीक्षित, अध्यक्ष हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग थे व धन्यवाद ज्ञापन प्रधान सचिव सुश्री बी.एस.शांताबाई ने ज्ञापित किया.

ऋषिकेश में कवि रामआसरे सम्मानित

'हिमालय और हिन्दुस्तान फाउन्डेशन, ऋषिकेश, उत्तराखंड में आयोजित दो दिवसीय महासम्मेलन में 'हिमालय और हिन्दुस्तान भूषण अवार्ड-२०११' से सम्मानित किया गया.

कई साहित्यकार सम्मानित

धरोहर स्मृति न्यास, बिजनौर द्वारा बाल साहित्य के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए डॉ० घमंडीलाल अग्रवाल, गुड़गांव हरियाणा को 'चौ. वीरेन्द्र सिंह स्मृति बाल साहित्य पुरस्कार', साम्प्रदायिक सद्भावना के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए डा० शरद नारायण खरे, मंडला, म.प्र. को 'बाबू सिंह चौहान स्मृति सांप्रदायिक सद्भावना पुरस्कार', समाज सेवा के लिए डॉ० अनिरुद्ध सिंह सेंगर,गुना, म.प्र. को लाला ओमप्रकाश स्मृति समाज सेवा पुरस्कार, अशोक आनन्द, देहरादून को रणवीर सिंह स्मृति व्यंग्य पुरस्कार, श्रीमती सुषमा मुनीन्द्र, सतना, म.प्र. को श्रीमती कान्ता निशा स्मृति नारी प्रेरणा पुरस्कार, राजगोपाल सिंह, दिल्ली को निश्तर ख़ानकाही स्मृति ग़ज़ल पुरस्कार प्रदान किया गया. इस अवसर पर डॉ० अजय जनमेजय की पुस्तक 'प्यारे शिशु गीत एवं ग़ज़ल संग्रह 'पूरा हिन्दुस्तान तिरंगा', शकील बिजनौरी की पुस्तक 'तारीखे-ए-अदब बिजनौर', डॉ० अनिल चौधरी की कृति 'उतारो चांद को छत से' ओमप्रकाश यति की कृति 'सच कहूं', तथा डॉ. गजेन्द्र बटोही के 'रजिस्ट्रेशन का लोकार्पण किया गया.

अम्बिका प्रसाद दिव्य स्मृति पुरस्कारों हेतु प्रवृष्टियां आमंत्रित है

उपन्यासकार, कवि, चित्रकार स्व. अम्बिकाप्रसाद दिव्य की स्मृति अनेक साहित्यिक पुरस्कारों हेतु पुस्तकें आमंत्रित है-

उपन्यास विधा हेतु- पांच हजार रुपये

कहानी विधा हेतु- दो हजार एक सौ

काव्य विधा हेतु- दो हजार एक सौ

नाटक, व्यंग्य ललित-निबंध, पत्रकारिता, बाल-साहित्य, लोक साहित्य, लघु कथा, समालोचना एवं साहित्यिक पत्रिकाओं हेतु दिव्य रजत अलंकरण

पुस्तकें जनवरी २०१० से दिसम्बर २०१२ के मध्य प्रकाशित होना चाहिए. पुस्तकों की दो प्रतियां, प्रत्येक प्रवृष्टि के साथ सौ रुपये प्रवेश शुल्क, लेखक, संपादक के दो रंगीन चित्र एवं परिचय ३० नवम्बर २०१२ तक श्रीमती राजो जगदीश किंजल्क, साहित्य सदन, प्लाट नं. १४५-ए, सांईनाथ नगर, सी सेक्टर, कोलार, भोपाल-४६२०४२, पर पहुंच जाना चाहिए.

संस्थान के २०१२ के सारे कार्यक्रम स्थगित

विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद की एक बैठक आयोजित की गयी। बैठक में विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद के संस्थापक अध्यक्ष व विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान के सचिव डॉ० गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी के पिता श्री पवहारी शरण द्विवेदी के निधन के कारण यह निर्णय लिया गया है कि वर्ष २०१२ में होने वाले संस्थान के सारे कार्यक्रम स्थगित कर दिये गये हैं. साहित्य मेला-२०१३ अपने निर्धारित समय पर होगा.

झण्डेवाला

✍अखिलेश निगम 'अखिल', लखनऊ, उ.प्र.

स्वतंत्रता दिवस की पूर्व संध्या..शहर का राजमार्ग....नगर बस, आटो रिक्शा, मोटर साईकिल, पैदल यात्री बेतरतीब ढंग से गुजरते हुए....उसी राजमार्ग पर...

'तिरंगा झण्डा ले लो...तिरंगा. झण्डा ले लो....' शिवराम अपनी साइकिल पर विभिन्न प्रकार के झण्डे आवाज लगाकर बेच रहा था. कार, स्कूटर, मोटर साइकिल, साइकिल एवं पैदल यात्री उसके बगल से गुजर जाते, कोई उसकी ओर ध्यान न देता, बीच-बीच में स्कूल में ले जाने के लिए इक्का-दुक्का बच्चे झण्डे खरीद रहे थे.

उसकी आंखों में १०-१५ वर्ष पूर्व के दृश्य घूम रहे थे, जब वह झण्डे बनाकर बेचता था तब सभी लोगों एवं बच्चों में तिरंगा झण्डा लेने की होड़ लग जाती थी और स्वतंत्रता दिवस एवं गणतंत्र दिवस के एक दो दिन पूर्व ही सारे झण्डे बिक जाते थे, लेकिन आज उसके बनाये हुए झण्डों का कों खरीददार नहीं है. निराश एवं हताश शिवराम घर लौट रहा था तभी उसका पुराना साथी राम सजीवन मिला, शिवराम ने पूछा-'अरे, आज तुम झण्डे नहीं बचे रहे हो, क्या तुम्हारे झण्डे बिक गये?

'..नहीं, मैं अब तिरंगा झण्डा नहीं बेचता, बल्कि राजनीतिक पार्टी कार्यालयों के बाहर पार्टियों के झण्डे एवं पोस्टर बनाता हूं, खूब बिक्री होती है, काम करने से छुट्टी ही नहीं मिलती.'

स्वतंत्रता दिवस के बाद शिवराम भी एक राजनीतिक कार्यालय के बाहर दुकान खोलकर तिरंगे झण्डे के साथ-साथ राजनैतिक पार्टियों के झण्डे रखने लगा तथा पोस्टर बनाने लगा, वह प्रत्येक सुबह पार्टियों के झण्डे के ऊपर तिरंगा झण्डा रखता किन्तु शाम होते-२ तिरंगा नीचे दब जाता और राजनीतिक पार्टियों के झण्डे ऊपर आ जाते.

अफसोस...वह भी बेचारा क्या करता.

आंसू

✍डॉ० नरेन्द्र नाथ लाहा, ग्वालियर, म.प्र.

मित्र बड़े दुःखी हो रहे थे. पारिवारिक दुखड़ा रो रहे थे. आंसूओं के बीच कह रहे थे, 'परिवार ने बड़ा दुःखी कर रखा है. पत्नि दिन-रात पार्टियों में व्यस्त रहती है. पुत्र अपने दोस्तों के बीच चौबिसों घण्टे मस्त रहते हैं. पुत्री का भी यही हाल है. मेरी तरफ को देखने का समय किसी के पास भी नहीं है.'

मैं भला मित्र को कैसे याद दिलाता कि नीचे वाले सबसे छोटे कमरे में उनके पिताश्री आंसूओं के बीच जानवरों जैसा जीवन व्यतीत कर रहे थे.

रोटी

सोनू ने घर से बाहर जाना था. सुबह-सुबह उठा अपनी तैयारी करने लगा. चाय का कप पिया, रिक्शा मंगाया. माँ ने सुबह-सुबह उठकर चार परांठे, सब्जी बना दी. उसने कहा, ''बेटा, रास्ते में खा लेना.'' बेटा हँसा, ''माँ, आजकल कौन रोटी ले जाता है, आप भी बस पुराने ज़माने की बात करती हो, जगह-जगह पर पिज़ा हट हैं, स्टॉल्स हैं, कहीं भी खाना खा लूंगा। आप इसे रखिये।'' माँ बोली ''नहीं बेटा, अगर न खा सके, तो किसी गरीब को दे देना, पर ले जाओ. '' माँ ने ज़बरदस्ती एक थैले में पानी की बॉटल, रोटी रख दी. बेटा स्टेशन पर पहुँचा, गाड़ी पकड़ी और गंतव्य की ओर चल पड़ा. सफ़र सिर्फ ६ घंटे का था. रास्ते में कुछ शरारती तत्वों ने रेल की पटरी क्षतिग्रस्त कर दी थी. रेल पटरी सही की जा रही थी. रास्ता ऐसी जगह पर खराब हुआ था कि दूर-दराज़ तक पानी का घूंट नहीं था. रेलवे का सामान भी चुटकियों में खत्म हो गया था. गरमी के मारे सब यात्रियों की हालत खराब हो रही थी. सोनू भी घड़ी देख रहा था. गाड़ी ३ घंटे लेट हो चुकी थी. भूख के मारे उसकी हालत खराब हो गई थी कि उसकी नज़र माँ के लिफ़ाफे पर पड़ी. आँखें भर आई. उसने खाना खाया, पानी पिया और माँ को लाख-लाख धन्यवाद किया.

✍**शबनम शर्मा,** सिरमौर, हि.प्र.

नेता व्याजस्तुति और जागो भाग्य विधाता

खण्ड काव्य

रचनाकारः
बालाराम परमार 'हंसमुख'

मूल्यः ५०/रुपये मात्र

प्रकाशकः
विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान,
एल.आई.जी-६३, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद, उ.प्र.-२११०११ मो०९३३५१५५९४९

दुनिया में किस लिये आता है आदमी, मर मर के भी जिये जाता है आदमी।

ग़ज़लें रचनाकार की आंतरिक अनुभूतियों को व्यक्त करने का एक अच्छा माध्यम है. जिसके वर्तमान परिवेश में आम पाठकों का अपना एक वर्ग है व श्रोता है. प्रस्तुत संग्रह के ग़ज़लकार महेन्द्र जोशी की रचनाएं अधिकांशतः आध्यात्मिक विषयों पर आधारित होती है. मैं व्यक्तिगत रूप से उनकी रचनाओं को लम्बे अरसे से पढ़ता चला आ रहा हूं. प्रस्तुत ग़ज़ल संग्रह 'तुम ही तुम' में अधिकांश ग़ज़ले सौन्दर्य और प्रेम के विषयों को छूती हुई हैं. बानगी के तौर पर संग्रह की कुछ शेर देखिए-

मौसमें बहाार ने नाशाद किया है,
इस दिल ने अब तुझे फिर याद किया है।

++++++++++++++++++++++
ऐ ज़िन्दगी सच बता क्या किया मुझे,
इक देवता से मनुज बना दिया मुझे।।
++++++++++++++++++++++
लाख चाहा तेरे दर से न गुज़रेगे कभी
राह जो भी मिला है तरे दर को ही मिला है।
+++++++++++++++++++++
जब आंख न देखेगी, नज़्ज़ारों का क्या होगा,
हम ही न जब रहेंगे, तो 'यारों' का क्या होगा।
++++++++++++++++++++++
अपनों का दिया ग़म दिल में ही रहे,
किसी ग़ैर से तो कहा नहीं जाता।

++++++++++++++++++++++
हर शख्स मुझे अपना सा लगता है,
हर दर्द मुझे अपना सा लगता है।।
++++++++++++++++++++++
चुप सभी ही हैं यहां कोई बोलता नहीं,
बंद सभी है खिड़कियां कोई झांकता नहीं।।

४२ पृष्ठ के इस ग़ज़ल संग्रह में कुल ६४ ग़ज़ले हैं. सामान्यतः सभी ग़ज़ले अच्छी बन पड़ी है. इस संग्रह को दिव्य प्रकाशन, ३०ए, गोपाल नगर, अमृतसर द्वारा प्रकाशित किया है. इसका मूल्य ६० रुपये हैं.

करिये पर उपकार नित, जैसे तरुवर आम। दे सबको छाया सुखद, मीठे फल निष्काम।

लगभग लुप्त प्रायः हो चुकी कुण्डलिया छन्द को आम आदमी या यह कहे कि उपदेश देने के लिए सर्वाधिक उपर्युक्त माना गया हैं. 'कविता करना' और 'कवि होना' दोनों में बहुत अंतर है. कवि हृदय बहुत ही कोमल व मर्मस्पर्शी होता है. उसकी कथनी व करनी में एकरुपता होती है. प्रस्तुत पुस्तक 'कुण्डलियां कुंज' के रचनाकार रामऔतार पंकज जी ने अपने स्तर से मानव को सत्पथ पर लाने का सार्थक प्रयास किया है. कुण्डलियों की भाषा बहुत ही सरल, सहज और बोधगम्य है. बशर्ते यह संग्रह सुधी पाठकों के हाथ तक पहुंचे. ४४ पृष्ठीय इस संग्रह में १३ शीर्षकों के अन्तर्गत कुल १५२ कुण्डलियां है. बानगी के तौर पर देखिए-

कलमकार का है यही, गुण कर्त्तव्य पुनीत।
सदा सृष्टि-कल्याण हित, रचे नीति के गीत।।
++++++++++++++++++++++++++++++
चिन्तन-लेखन कीजिये, इतना गहरा बन्धु।
शील-धैर्य धरणी सरिस, गहरा जितना सिन्धु।।
+++++++++++++++++++++++++
रखिये देने का सदा, न कि लेने का भाव।
तरु ज्यों तपता धूप में, पथिकों को दे छांव।।
++++++++++++++++++++++++++++++
अति का सीधापन बुरा, सीधा गया सताय।
मछुआ नोचे केंचुआ, सॉप देख डर जाय।।
सांप देख डर जाय, सन्निकट कभी न आता।
सीधे पादप कटें, न टेढ़ा काटा जाता।।
'पंकज' यह चित-चेत, करें शोधन निज मति का।
शुद्ध सहज हो भाव, न अच्छा सीधा अति का।।
+++++++++++++++++++++++++++
कर्त्तव्यों की राह में, मिले कष्ट-संताप।
हर तरु के नीचे दबा, उसका अपना बाप।।
उसका अपना बाप, मिटा कर अपनी हस्ती।
होकर समतल भीट, बसाता सुन्दर बस्ती।।
'पंकज' हो जयकार, श्रेष्ठतम मन्तव्यों की।
अमर कीजिये नाम, टेक रख कर्त्तव्यों की।।
+++++++++++++++++++++++++++++++
जिसने सार्थक कर लिया, मिला समय-संयोग।
हुआ सफल जग में वही, पाया सब सुख-भोग।।
पाया सब सुख-भोग, किन्तु जो समय गंवाये।
समय न आया पुनः, सकल जीवन पछताये।।

इस संग्रह को प्रभात प्रकाशन, लखनऊ ने प्रकाशित किया तथा इसका साजिल्द मूल्य १००रुपये व अजिल्द मूल्य ८० रुपये है.

हमारे प्रकाशन :

एक वकील साहित्यकार की डायरी

01	हरियाणा साहित्य एक विहंगम वृष्टि	लेखक : विधिश्री पवन चौधरी मनमौजी	मूल्य 151 रूपये
02	संस्मरण तेरे गीत मेरे मीत	लेखक : विधिश्री पवन चौधरी मनमौजी	मूल्य 151 रूपये
03	मेरे गीत तेरे मीत	लेखक : विधिश्री पवन चौधरी मनमौजी	मूल्य 151 रूपये
04	कचहरी में कोहिनूर (लघुकथाएं)	लेखक : विधिश्री पवन चौधरी मनमौजी	मूल्य 151 रूपये
05	अज्ञेय मनमौजी के मधुर संवाद	लेखक : विधिश्री पवन चौधरी मनमौजी	मूल्य 51 रूपये
06	पत्र संग्रह, तेरे नाम मेरे नाम	लेखक : विधिश्री पवन चौधरी मनमौजी	मूल्य 151 रूपये

कहानी / उपन्यास / लघुकथा		
रोड इंस्पेक्टर	लेखक : गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी	मूल्य : 51 रूपये
जगन की कनिया : कहानी संग्रह (पेपरबैक)		
(साजिल्द)		मूल्य : 151 रूपये
काव्य :		
ये आग कब बुझेगी भाग-2	सम्पादक : गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी	मूल्य : 25 रूपये
काल कथानक - खण्ड काव्य	रचनाकार : आर.पी.सक्सेना, उर्फ रज्जन	मूल्य : 51 रूपये
नन्हीं सी कोंपल	रचनाकार : यदुमणि कुम्हार	मूल्य : 51 रूपये
काव्य बिम्ब-काव्य संग्रह	संपादक : गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी	मूल्य : 51 रूपये
कैसे कहूँ-काव्य संग्रह	संपादक : सूर्य नारायण शूर	मूल्य : 51 रूपये
सुप्रभात-काव्य संग्रह	संपादक : गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी	मूल्य : 25 रूपये
अपराध (खण्ड काव्य)	लेखक : राजेश सिंह	मूल्य : 21 रूपये
मधुशाल की मधुबाला (खण्ड काव्य) द्वितीय संस्करण)	लेखक : राजेश सिंह	मूल्य : 25 रूपये
मधुशाला की मधुबाला (खण्ड काव्य) प्रथम संस्करण)	लेखक : राजेश सिंह	मूल्य : 10 रूपये
आलेख :		
एक अद्भुत व्यक्तित्व-डॉ अनवार अहमद	संपादक : गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी	मूल्य : 25 रूपये
अन्य		
तिरंगी पहेलियाँ	रचनाकार : मुखराम माकड़ 'माहिर'	मूल्य : 21 रूपये
ये आग कब बुझेगी : भाग-1	संपादक : गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी	मूल्य : 100 रूपये
पत्रकार यज्ञ	संपादक : गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी	मूल्य : 21 रूपये
लर्निंग कम्प्यूटर विद फन भाग-1,2	लेखक : गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी	मूल्य : 35 रूपये

विशेष :

01 संस्थान के सदस्यों 50 प्रतिशत

02 अहिन्दी भाषी राज्यों के साहित्यकारों को 40 प्रतिशत

03 हिन्दी मासिक 'विश्व स्नेह समाज' पत्रिका के आजीवन सदस्यों को 50 प्रतिशत तथा अन्य प्रकार के सदस्यों को 25 प्रतिशत, की छूट पर सभी किताबें उपलब्ध हैं।

अन्य किसी प्रकार की जानकारी के लिए सम्पर्क करें :

विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान

एल.आई.जी-144/93, सेक्टर-2, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद

E-mail : sahityaseva@rediffmail.com

स्वामी, संपादक, प्रकाशक, मुद्रक गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी द्वारा भार्गव प्रेस बाई बाग से मुद्रित कराकर एल.आई.जी.-93, नीम सरांय कालोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद से प्रकाशित किया
डाक पंजीयन संख्या : एडी-306/2008-11 आर.एन.आई. नं0 यूपीहिन्दी2001/8380 सम्पादक : गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी